दिनेश चन्द्र अवस्थी

भावांजलि

(गीतिकाएँ)

दिनेश चन्द्र अवस्थी

सुलभ प्रकाशन
लखनऊ

प्रकाशक :

सुलभ प्रकाशन
17, अशोक मार्ग
लखनऊ।

कृतिस्वाम्य : रचयिताधीन
संस्करण : प्रथम
वर्ष : 2001 ई०

ISBN : 81-7323-142-6

मूल्य : 100.00 रुपये

लेजर कम्पोजिंग : **क्रिएशन प्वाइंट**
13/12, टिकैत राय तालाब कालोनी,
लखनऊ। फोन : 0522.416514

मुखावरण : सुरेन्द्र सिंह मेहता

मुद्रक : **नॉर्दन ऑफसेट प्रेस**
टिकैत राय बड़ा तालाब,
जे.के. मैरेज हाल कम्पाउन्ड,
मोहान रोड, लखनऊ।
फोन : 0522.419790

यह पुस्तक उत्तर प्रदेश शासन के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित की गई है।

BHAVANJALI (Collection of Geetikayen)
by Dinesh Chandra Awasthi
Rs. 100-00

अपनी सहधर्मिणी
एवं
प्रेरणादायिनी
आयु० पुष्पा अवस्थी को
अपना सर्वस्व सहित
यह कृति भी
समर्पित

'भावांजलि' एक सफल काव्य–कृति

अनेक राजकीय अधिकारियों ने शासकीय कार्य करते हुए भी हिन्दी–भाषा और साहित्य की महती सेवा की है। उन्होंने अपनी उत्तम काव्य–कृतियों से माँ–भारती के भण्डार को भरने में विशिष्ट योगदान दिया है। ऐसे अधिकारियों में कविवर श्री दिनेश चन्द्र अवस्थी, संयुक्त सचिव एवं वित्त नियंत्रक, विधान सभा सचिवालय, उ0प्र0, लखनऊ का नाम प्रमुख है। उन्होंने अनेक कविता–संग्रहों के माध्यम से हिन्दी काव्य–विधा को सुसम्पन्न करने का प्रशंसनीय प्रयास किया है। विशेष रूप से छन्द–बद्ध रचनाएँ लिखकर छन्द को सम्यक् प्रतिष्ठा प्रदान करने का उनका अभियान स्तुत्य है। कुण्डलिया, दोहा, गीत, ग़ज़ल आदि सभी प्रकार के छन्दों की रचना में उन्हें पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है। भावांजलि नाम से उनकी गीतिकाओं का संग्रह निश्चय ही हिन्दी प्रेमियों, रसज्ञ पाठकों और सुधी–समीक्षकों को अपनी ओर आकर्षित करने में सर्वथा समर्थ होगा। अवस्थी जी की भाषा भावानुकूल है। सहज, सुबोध, प्रवाह–पूर्ण, प्रांजल एवं परिष्कृत होने के कारण उनकी भाषा सहज सम्प्रेषणीय है और पाठकों से तादात्म्य स्थापित करने में सक्षम है।

'गीतिका' विधा को अपना कर अवस्थी जी ने गीतिकाओं के प्रणयन में अपनी दक्षता और कुशलता का परिचय दिया है। हिन्दी गीतिकाओं के इतिहास में उनका योगदान कभी भी विस्मृत नहीं किया जा सकेगा। अलंकारों के प्रयोग और रस–परिपाक में भी कविवर अवस्थी जी सिद्धहस्त हैं। 'भावांजलि' में अनेक अलंकारों और विविध रसों का आनन्द पाठकगण उठा सकेंगे।

विषय की व्यापकता की दृष्टि से रचना उच्चकोटि की है। गीतिकाओं में आध्यात्मिकता, नैतिकता, जीवन–शैली, हास्य–व्यंग्य सामाजिक विसंगति, सम सामायिक सन्दर्भ, राष्ट्रीय भावना आदि के दृष्टान्त यत्र–तत्र उपलब्ध हैं। माँ शारदा की वन्दना करते हुए अवस्थी जी निवेदन करते हैं :–

अज्ञान लेकर ज्ञान दो, माँ शारदे!
अपनी कृपा का दान दो, माँ शारदे!
x x x x x x
सन्मार्ग से भटके नहीं यह लेखनी,
मेरी क़लम को आन दो, माँ शारदे!

ऐसा प्रतीत होता है कि माँ शारदा ने श्री दिनेश चन्द्र अवस्थी की प्रार्थना स्वीकार कर ली है तभी उन्हें सात्त्विक भावभूमि पर आधारित रचनाओं के सृजन में

सफलता मिली है। अवस्थी जी की ईश्वर में अनन्य आस्था है। उन्होंने अहं, अविश्वास, छल–प्रपंच, पाप, दुष्कर्म, अपराध, माया–मोह, काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ अपकार आदि बुराइयों की आलोचना की है तथा परोपकार, पर–सेवा, ईश्वरीय–विश्वास, श्रद्धा–भक्ति आदि का सन्देश देकर समाज को प्रेरित और प्रोत्साहित करने का प्रयास किया है। ईश्वर की शरण में अपने को पाकर अवस्थी जी चिन्ताओं से मुक्त होने की भावना अभिव्यक्त करते हैं :–

हैं तेरी शरण में जब, तो फ़िक्र से क्या मतलब ?
तू है तो ये रंज़ोगम, सब चाँद–सितारे हैं।

कवि ने ईश्वर के प्रति आभार प्रकट किया है, कृतज्ञता ज्ञापित की है, उसकी कृपा को ही सर्वाधिक मान्यता दी है :–

जिसने हमको जन्म दिया है, पाला–पोसा है,
उसको शीश झुकाने में, फिर भला शरम क्यों है?

अपनी काव्य–प्रतिभा को अवस्थी जी ने ईश्वर की अनुपम देन माना है :–

ईश्वर ने ही दी है प्रतिभा, कवि बन जाने की,
करना नहीं इबादत उसकी, हाथ क़लम क्यों है ?

सुकर्म के महत्त्व का गायन भी कवि द्वारा किया गया हैं और सम्पूर्ण सृष्टि का ईश्वर ही रचयिता है तथा सबका संबल और रक्षक है, इस विचार को भी कवि द्वारा प्रस्तुत किया गया है :–

बना न कोई सूत्र अभी तक जीने का,
हैं सुकर्म ही जीवन–फल, विश्वास करो।

x x x x x x

ये दुनिया ईश्वर की, केवल ईश्वर की,
सबका ही है वह संबल, विश्वास करो।

अच्छे लोगों की तलाश के लिए कविवर अवस्थी जी सतत प्रयत्नशील हैं क्योंकि अच्छे लोगों का संग अनेक सुखों का दाता है :–

अच्छे लोग यहाँ बिरले ही मिलते हैं,
हूँ तलाश में लगा हुआ, मैं क्या करूँ ?

कवि प्रभु की कृपा का आकांक्षी भी है और उसका यह दृष्टिकोण है कि सांसारिक दुख उसकी अनुकम्पा से दूर हो सकते हैं :–

बुद्धि–शक्ति दो ऐसी, तेरा ध्यान करें,
मिटें ताप–संताप, प्रभुजी कृपा करो।

अवस्थी जी ईश्वर से यह निवेदन करते हैं कि जिस प्रकार पहले अनेक प्राणियों का उद्धार किया है, उसी प्रकार उनका भी उद्धार करें :–

इससे भी पहले तूने, बहुतों को उबारा है,
कर दो कृपा महाराज, क्या मैंने खता की है?

कविवर अवस्थी जी ने अनेक रचनाओं द्वारा ईश्वर में अडिग आस्था, अमिट विश्वास और असीम भक्ति तथा समर्पण–भावना प्रकट की है। एक दृष्टान्त प्रस्तुत है :–

बिना प्रभु–कृपा, भक्ति मिलती नहीं।
बिना भक्ति के, शक्ति मिलती नहीं।

x x x x x x

अच्छे और बुरे हैं जैसे, हैं तो महज़ तुम्हारे ही,
आये शरण तुम्हारी हम जब, किसी तरह उद्धार करो।

x x x x x x

माया–मोह छोड़ के, प्रभु में ध्यान लगाना है,
वक़्त गया सो गया, न आगे और गँवाना है।

x x x x x x

प्रभु! तुमको तो दयावान हरदम है कहा गया,
रहम–करम की मुझ पर भी तो, कुछ बरसात करो।

कवि श्रेष्ठ अवस्थी जी ने परोपकार और मृदु व्यवहार का भी सन्देश दिया है जो वर्तमान युग में अत्यन्त आवश्यक और प्रासांगिक हैः–

तुम करो उपकार सबका नित्य ही,
साथ मृदु व्यवहार भी करते रहो।

श्री दिनेश चन्द्र अवस्थी को आहों में, रफ़ीक़ की बाहों में, अपने ख़्यालों में, प्रिय की निगाहों में, दुखियों की कराहों में, शोख़ अदाओं में, ग़मगीन फ़िज़ाओं में और सत्य की राहों में ग़ज़ल दृष्टिगत होती है। उदाहरण स्वरूप कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं :–

मुझे, ग़रीब की आहों में ग़ज़ल दिखती है।
मुझे रफ़ीक की बाहों में ग़ज़ल दिखती है।

x x x x x x

दर्द को देख, न हो दर्द, तो लिखना कैसा ?
मुझे दुखियों की कराहों में, गज़ल दिखती है।

कर्म को धर्म बनाने का सन्देश भी कवि द्वारा दिया गया है:–

तुम कर्मों को धर्म बना लो,
जो कर्मठ वे कभी न थकते।

दूसरों के सुख में सुखी होने और दुख में दुखी होने का भी जीवन में विशेष महत्त्व है। यदि अपने दुखों को भूलकर दूसरों को उनके दुखों में सान्त्वना प्रदान की जाय तो आत्म–सन्तुष्टि स्वाभाविक है:–

अपने ग़मों को कभी–कभी भूल जाइए।
औरों के ग़मों को भी कभी तो, बँटाइए।

प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में आत्म–सम्मान के प्रति सजग और जागरूक रहना चाहिए। यह भाव भी अवस्थी जी ने व्यक्त कर मानव को स्वाभिमान की रक्षा के लिए प्रेरित किया है :–

होता न हो सम्मान तुम्हारा जहाँ कहीं,
उस जगह पर ठहरना, अच्छा नहीं होता।

मानव–जीवन बड़ी कठिनता से मिलता है अतः मनुष्य को जीवन जीने की कला आनी चाहिए और उसे मानवता का धर्म निभाने के लिए सदा प्रयासरत रहना चाहिए। इस भावभूमि पर अवस्थी जी ने उद्‌गार व्यक्त किये हैं, वे भी अनुकरणीय हैं :–

जीनी है ज़िन्दगी तो, जियो ख़ूब शान से,
करना है कोई काम, करो ख़ूब शान से।

x x x x x x

जीने के लिए, समझदारी जरूरी है
जीवन में सबके ख़ुद्दारी जरूरी है।

अवस्थी जी ने साम्प्रदायिक सद्‌भाव और राष्ट्रीय एकता, देश–प्रेम एवं समाज–सुधार आदि विषयों पर भी अपनी लेखनी चलाई है। देश की दशा सुधारने के लिए उनकी चिन्ता स्वाभाविक है :–

देश की हालत है जो, अब वह बदलनी चाहिए।
एकता की ही पताका, अब फहरनी चाहिए।

x x x x x x

संकट में देश हो जब, इज़्ज़त पे आँच आये,
बलिदान के लिए तब, तबियत मचलनी चाहिए।

x x x x x x

छिपी हुई एकता देश की, हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख–नीति में,
सबकी वाणी से ध्वनि आये, टूट न जाये मन का मंदिर।

कविवर श्री दिनेश चन्द्र अवस्थी हास्य–व्यंग्य की रचनाएँ प्रणीत करने में भी सिद्धहस्त हैं। विसंगतियों, विषमताओं और वर्तमान बुराइयों पर उन्होंने कटाक्ष किया है और उनसे मुक्ति प्राप्त करने के लिए परामर्श भी दिया है। उन्होंने पैनी एवं सूक्ष्म दृष्टि से समाज की विद्रूपताओं को देखा है और उन पर हास्य–व्यंग्य सम्बन्धी कविताएँ प्रस्तुत की हैं। कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं :–

सफल ज़िन्दगी के लिए, तुम इतना सीख लो।
अवसर के अनुकूल ही, तुम चलना सीख लो।

x x x x x x

मतलब से बस मतलब रखना, दुनिया जाय रसातल में।
काम नहीं बस बातें करना, दुनिया जाय रसातल में।

x x x x x x

आदमी का आज तो, ईमान बिकता है।
आदमी भी जिस तरह, सामान बिकता है।

x x x x x x

कलियुग का यह समय चल रहा, नीति–धर्म की बातें छोड़ो,
वादा करके नहीं निभाओ, भला आदमी क्या लेगा?

x x x x x x

पीठ पर मेरी लिखाओ, मैं बिकाऊ माल हूँ।
हाट में मुझको बिठाओ, मैं बिकाऊ माल हूँ।

'तितलियाँ' शीर्षक से प्रस्तुत गीतिका भी पठनीय, विचारणीय एवं प्रशंसनीय है। कुछ पंक्तियाँ उद्धृत हैं:–

सुन्दर होतीं ख़ूब तितलियाँ।
मन बहलातीं ख़ूब तितलियाँ।

x x x x x x

सुन्दरता को छुओ न, देखो,
यह बतलातीं ख़ूब तितलियाँ।

इस प्रकार कविवर श्री दिनेश चन्द्र अवस्थी जी ने विविध विषयों पर गीतिकाओं का सुन्दर सृजन किया है। ये गीतिकाएँ रसज्ञ पाठकों को अवश्य ही प्रभावित करेंगी। सुधी समीक्षकों द्वारा यह कृति प्रशंसित होगी। आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी–जगत में 'भावांजलि' का सर्वत्र स्वागत होगा। ऐसी श्रेष्ठ रचनाओं के लिए मैं कवि को बधाई देता हूँ और यह मंगल कामना करता हूँ कि अवस्थी जी इसी प्रकार साहित्य–साधना में संनिरत रहें और प्रगति–पथ पर अग्रसर हों।

विनोद चन्द्र पाण्डेय
पूर्व सचिव, पर्यावरण
उ0प्र0 शासन, लखनऊ।

सी.–10, सेक्टर 'जे',
अलीगंज, लखनऊ
दूरभाष– 761735

आशीर्वचन

श्री दिनेश चन्द्र अवस्थी हिन्दी के नव उदीयमान कवियों में हैं। इस काव्य कृति से पूर्व भी वे दो काव्य–संकलन प्रकाशित कर चुके हैं जिनको यथा समय सराहा भी गया है। प्रस्तुत काव्य संकलन का शीर्षक 'भावांजलि' रखा गया है जो सर्वथा समीचीन हैं। इसमें संकलित कविताएं, जिन्हें उन्होंने गीतिका की संज्ञा दी है, अन्यान्य भावानुभूतियों और जीवनानुभवों से सम्पृक्त हैं।

अवस्थी जी के इस संकलन की केन्द्रवर्ती वस्तु जीवन के विविध पहलुओं से सम्बद्ध है। एक ओर रचनाकार का मन प्रभु–प्रार्थना, ईश–वंदना की ओर उन्मुख है तो दूसरी ओर वह समाज और लोकजीवन की विषमताओं से आक्रांत। वस्तुतः आध्यात्मिक काव्य लोकोत्तर जीवन से अथवा लोकोत्तर अनुभूतियों से, आत्मा–परमात्मा के सहसंबंध विषयक भावोद्‌गारों से अनुस्यूत होता है। अवस्थी जी ने उस स्तर को स्पर्श करने का प्रयास अपनी छन्दोबद्ध पंक्तियों में किया है, वैसे उनका सारा चिंतन–दर्शन लोकजीवन के नाना पहलुओं का ही प्रतिबिम्ब प्रतीत होता है। कुछ के काव्य पंक्तियां अत्यंत प्रेरणास्पद भी हैं, यथा–

हो सके तो दीप बन जलते रहो।
और सबकी पीर नित हरते रहो।
आज कडुवाहट भरे इस दौर में,
हँसाओ सबको और खुद हँसते रहो।

छंद में गति, यति और लय का निरंतर निर्वाह होना चाहिए। उसका तुकांत होना उतना आवश्यक नहीं। अवस्थी जी ने आद्योपांत छंद का निर्वाह किया है। अतः उनकी कविता कविता है मात्र पद्य नहीं। इस संकलन को वह गीतिका–(ग़ज़ल) संग्रह मानते हैं। ग़ज़ल फारसी छंद है जो उर्दू से होकर हिन्दी में प्रविष्ट हुआ है। परिणामस्वरूप उसके स्वरूप में भी परिवर्तन आ गया है। अतः शुद्ध शास्त्रीय दृष्टि से विचार न करें तो यह संग्रह ग़ज़ल–संग्रह माना जा सकता है। जो भी हो रचनाकार की लगन, काव्य–रचना–अभ्यास सराहनीय है।

अस्तु।

डॉ0 सत्यदेव मिश्र

प्रोफेसर,
हिन्दी तथा आधुनिक भाषा विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
दूरभाष – 370165

'भावांजलि' की भाव–सम्पदा

श्री दिनेश चन्द्र अवस्थी विरचित गीतिकाओं के संग्रह 'भावांजलि' में सत्तर गीतिकाएँ आध्यात्मिक, नैतिक, जीवन–दर्शन और हास्य–व्यंग्य शीर्षकान्तर्गत व्यवस्थित की गई हैं। गीतिका छन्दशास्त्र का एक मात्रिक छन्द भी होता है जिसके प्रत्येक चरण में 26 मात्राएँ होती हैं और 14 तथा 12 के अन्तर से यति और विराम होता हैं। इसमें चार चरण होते हैं। उदाहरण के लिए निम्नलिखित प्रार्थना का उल्लेख किया जा सकता है :–

'हे प्रभो ! आनन्ददाता, ज्ञान हमको दीजिए।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को, दूर हमसे कीजिए।।
लीजिए हमको शरण में, हम सदाचारी बनें।
ब्रह्मचारी धर्मरक्षक, वीर व्रतधारी बनें।।'

इसे चर्चरी और चंचरी छन्द के नाम से भी जाना जाता है। कतिपय छन्द शास्त्रियों की मान्यता है कि गीतिका छन्द हरिगीतिका छन्द में से आद्यविकल हटा देने से बनता है। हिन्दी में उर्दू छन्द ग़ज़ल के प्रभाव स्वरूप इस नये छन्द को गीतिका नाम दिया गया है। कविवर दिनेश चन्द्र अवस्थी ने अपने 'नम्र निवेदन' में लिखा है कि 'ये गीतिकाएँ ग़ज़ल की बनावट–व्याकरण में हैं' और गीतिका नाम देने का कारण बताया है कि चूँकि ये गीतिकाएँ ग़ज़ल की बहर में नहीं हैं अतः इन्हें ग़ज़लें नहीं कहा गया है। फिर भी ग़ज़ल छन्द की सभी भावात्मक विशेषताएँ इनमें समाविष्ट हैं, उदाहरण के लिए सहजता, सरलता, गेयता, भाव प्रवणता, अर्थनिष्पत्ति, रसमयता और सम्प्रेषणीयता। शिल्पात्मक विशेषताओं में द्विपदात्मकता, उक्ति वैचित्र्य, बोधगम्य भाषा और अधिकांशतः अभिधात्मक व्यंजना शैली का प्रयोग किया गया है।

विषय–फलक बहुत व्यापक और समाजाधृत है। यों मोटे तौर पर कवि ने अपनी गीतिकाओं को आध्यात्मिक, नैतिक, जीवन–दर्शन और हास्य–व्यंग्य शीर्षकों के अन्तर्गत ही वर्गीकृत किया है किन्तु वर्ण्य–विषय का क्षेत्र इन्हीं शीषकों में समाहित नहीं हो पाता है। उदाहरण के लिए यदि हास्य–व्यंग्य शीर्षक में व्यवस्थित की गई गीतिकाओं को देखें तो पहली रचना में आधुनिक युग के व्यवहार पर तीखी दृष्टि डाली गई है। 'दुनिया जाय रसातल में' में स्वार्थपरता की खिल्ली उड़ाई गई है। 'बन जाओ मक्कार' में आज के जीवन में सत्य को अनदेखा करने और अहसानफरामोशी की ओर इंगिति है। 'अच्छा हुआ' में उन परिस्थितियों का चित्रण है जिनमें हम रहने के लिए विवश हैं, उन्हें बदलने में हम अशक्त–अक्षम हैं। 'ईमान बिकता है' गीतिका में अति भौतिकतावादी दृष्टिकोण और समाज में अर्थ के

सर्वग्रासी रूप पर चोट की गई है। 'बेशर्म बनो' में उन स्थितियों की विद्रूपता पर व्यंग्य किया गया है जिनके अनुसार आज के आदमी को ढलना व्यावहारिकता का पर्याय है। यदि आदमी बेशर्म, बेदर्द, खुदग़र्ज़, बेधर्म एवं अवसरवादिता का आचरण करे, दूसरों के लिए सरदर्द बने, ताकतवरों से भारी पड़ जाने पर मर्द बने और दिखावे के लिए हमदर्द बने तो सफल कहलाएगा। 'दैया–रे–दैया' गीतिका की प्रत्येक द्विपदी में अलग–अलग विषय–वस्तु का ग्रहण किया गया है। इस प्रकार सात द्विपदियों में सात विषयों को वर्ण्य–विषय बनाया गया है। 'फुल टाइम का देशभक्त' रचना में तथाकथित देशभक्तों का आचरण उपहास का केन्द्र बिन्दु बनाया गया है। 'किसकी जिम्मेदारी है' शीर्षक रचना में भी सात विषयों पर लेखनी उठाई गई है। 'कुर्सी' गीतिका में कुर्सी–मोह का महत्व दर्शाया गया है जिसकी प्राप्ति के लिए समस्त आदर्शों को दांव पर लगाने की प्रतिष्ठा वर्णित है। 'ईश्वर की इच्छा' गीतिका में विसंगतियों को ईश्वर की इच्छा मान कर संतोष कर लेने की मान्यता पर व्यंग्य किया गया है। 'भला आदमी क्या कर लेगा' में भले इन्सानों के साथ की जा रही ज़्यादतियों का ज़िक्र किया गया है। जैसा कि शीर्षक से ही ध्वनित होता है आज सच्चे इन्सानों की संख्या बहुत न्यून हो रही है। भले इन्सान पीछे हो गए हैं और बुरे आदमी आगे। 'झूठे–मक्कार' में झूठों और मक्कारों की असलियत का पर्दाफ़ाश किया गया है। 'पत्नी के क़ाबू में रहिए' गीतिका में पत्नी के क़ाबू में रहने से कितने लाभ मिलते हैं, समाज में कितनी प्रतिष्ठा मिलती है इसका उल्लेख है जबकि प्रचलित मान्यता के अनुसार काबू में रहने वाले पति को 'जोरू का गुलाम' कहा जाता है। 'उसकी फ़िकर करो' शीर्षक गीतिका में वर्तमान समय की माँग के अनुसार जिनकी फ़िक्र करने की आवश्यकता है, उनका निर्धारण किया गया है।

किसी भी क्षेत्र में यदि सफलता पानी है तो उसके लिए सच्ची साधना करना अनिवार्य है। साधना में 'इष्ट देव' की अनुकम्पा भी चाहिएः–

'करो साधना, इष्ट की नित्य तुम,
बिना साधना सिद्धि मिलती नहीं।'

भारतीय अध्यात्म की चरम स्थिति होती है आत्मा का परमात्मा में विलय। हमारे धर्म में आत्मा के परमात्मा में विलय के लिए चार मार्ग निर्धारित किए गए हैं – ज्ञान मार्ग, कर्म मार्ग, योग मार्ग और भक्ति मार्ग। इस कलिकाल में भक्ति मार्ग ही सबसे अधिक सुकर है क्योंकि इसमें परिवार, समाज, देश, राष्ट्र, मानवता की जिम्मेदारियों का निर्वाह करते हुए भी निरत हुआ जा सकता है। कवि की इसी मार्ग

पर आस्था है –

'जिन्दगी में न ज़्यादा ख़्वाहिश है,
चाहता इतना हूँ कि तू मिल जाये।'

निम्नलिखित द्विपदी में कवि ने कितनी व्यावहारिक और अनुभूतिजन्य बात कह दी है कि संसार में अपने कर्मों के लिए हम स्वयं जिम्मेदार होते हैं। जैसा करेंगे वैसा भरेंगे। जो बोएँगे वही काटेंगे। हमारा अपना व्यवहार ही किसी को दोस्त और दुश्मन बनाने का आधार होता है :–

'हम खुद अपने दोस्त और दुश्मन हैं अपनी आदत से,
इसीलिए तो हम अपने से अन्दर–अन्दर लड़ते हैं।'

अपने स्वाभिमान को, अपने सम्मान को, अपनी प्रतिष्ठा को, अपने ईमान को गिरवी रखकर जीना तो जीना नहीं होता, वह तो मरना ही कहा जाएगा लेकिन आधुनिक युग में हम अपना सब कुछ दांव पर लगा कर जीने का प्रयास करते हैं और यह प्रयास रोज़–रोज़ का मरना ही है। यही इस द्विपदी में कवि के चिन्तन का आधार है :–

'जिन्दगी में एक दिन मरना नियत,
क्या ज़रूरी रोज़ ही मरते रहो।'

आज का ज़माना है छल का, कपट का, मक्कारी का, झूठ का, फरेब का इसलिए जिनके व्यवहार में ये सब गुण हैं, वे तो सुखी हैं, सम्पन्न हैं, सफल हैं और जिनका आचरण इनसे विपरीत है उनका हाल बताती है यह द्विपदी :–

'मुझसे न हाल पूछें, चलते जो उसूलों पे,
रहते ज़रूर घर में, पर देशनिकाले हैं।'

स्वाभिमान प्रत्येक व्यक्ति में होना चाहिए और वह कवि में भी है। इसीलिए वह कोई चीज़ ख़ैरात में नहीं लेना चाहता। विनिमय में यदि मिल जाए तो उसे वह स्वीकार है–

'मैं प्यार दूँगा तभी प्यार लूँगा,
नहीं तो मिला प्यार ख़ैरात होगी।'

ईश्वर है कहाँ नहीं! कण–कण में, वन–वन में, उपवन में, क्षण–क्षण में, वस्तु–वस्तु में व्यक्ति–व्यक्ति में, जीव–जीव में वही तो समाया है। प्रकृति के प्रत्येक कार्य–व्यापार में उसी की झलक दिखाई देती है :–

'जहाँ भी देखो खुदा है, है खुदा, केवल खुदा,
आजमाने हेतु कुदरत के इशारे देख लो।'

जीवन को समझने–समझाने के लिए आदिकाल से लेकर अब तक कितने ऋषियों–मुनियों, चिन्तकों–विचारकों, कवियों और साहित्यकारों ने अपनी–अपनी परिभाषाएँ दी हैं। इसकी इयत्ता और महत्ता प्रतिपादित करने का प्रयास किया है किन्तु क्या जीवन की सार्वभौम और सर्वमान्य परिभाषा आज दी जा सकी है, इसे कोई पूर्णतया समझ पाया है? उत्तर यही है :–

'ज़िन्दगी को कोई भी समझा नहीं,
ज़िन्दगी सबसे मुश्किल किताब है।'

मानव जीवन में बुराइयाँ हर युग में रही हैं। लेकिन बुराइयों पर लोग लज्जित होते रहे हैं। उनकी मात्रा भी कम रही है परन्तु आज एक ओर जहाँ बुराइयों का प्रतिशत बहुत बढ़ गया है, वहीं भलाई पर भी उनका वर्चस्व और प्रभुत्व स्थापित हो रहा है। इस स्थिति को ईश्वर की इच्छा ही मानना संगत होगा–

'सदा चोरियाँ होती आईं, आगे होंगी भी,
चोर शाह को पकड़ रहे, ईश्वर की इच्छा।'

एक ख़ूबसूरत–सी उपमा देखिए इस द्विपदी में :–

'जाड़े की गुनगुनी धूप सी भली खुशामद,
जो करता हो सर–सर–सर, उसकी फ़िकर करो।'

लेकिन जनाब अवस्थी खुद ऐसा नहीं करते हैं, दूसरों को ही सलाह देते हैं। आज के सफल कर्मचारी की ख़सूसियत कितने ख़ूबसूरत अन्दाज़ में कवि ने बयान की है :–

'नौकरी सरकारी है, मैं क्यों काम करूँ?
कभी इधर,कभी उधर, रोज़ सुबह–शाम करूँ।'

एक कहावत है–जहाँ बर्तन होंगे वे टकराएंगे ही। लेकिन बड़े नेताओं–अफसरों की यह टकराहट बड़ी मज़ेदार होती है। अगर आपको मालूम न हो तो अवस्थी जी की यह द्विपदी पढ़ लें :–

'होता महज़ दिखावा यों लड़ना–झगड़ना,
टकराते उनके जाम, अँधेरे–अँधेरे।'

इस प्रकार आप देखेंगे कि श्री अवस्थी की इन गीतिकाओं में आज का

परिवेश, आज का आदमी, उसका आचार–व्यवहार, उसकी मनोवृत्ति, उसकी प्रवृत्ति, उसकी मानसिकता अपने उत्कटतम रूप में अभिव्यक्त हुई है। शब्द सरल हैं, सहज हैं, लेकिन व्यंग्य का रूप धारण कर उनमें बड़ी मारक क्षमता उत्पन्न हो गई है। यह मार संहारक नहीं है, तिलमिला देने वाली है , आहत करने वाली है, सोचने को विवश करने वाली है। इनका आप अध्ययन करें और तटस्थ तथा अप्रभावित होकर निकल जायँ, यह सम्भव ही नहीं है। मैं श्री दिनेश चन्द्र अवस्थी को शुभाशीष देता हूँ कि उनकी लेखनी यों ही सतत गतिमान और प्रवहमान बनी रहे तथा नई–नई कृतियों से माँ–भारती का भण्डार भरती रहे, सही दिशा–निर्देश करती रहे। कृति पर हार्दिक बधाई।

डॉ. रामाश्रय सविता

558 / 28घ, सुन्दर नगर,
आलमबाग, लखनऊ : 226005
दूरभाष– 458284

विनम्र निवेदन

ईश्वर की कृपा, माता–पिता एवं गुरु के आशीर्वाद से मैं जो काव्य–सृजन कर सका हूँ वह आपके सामने है। 'भावांजलि' गीतिकाओं का संग्रह है। ये गीतिकाएँ ग़ज़ल की बनावट–व्याकरण में हैं। चूँकि ये गीतिकाएँ ग़ज़ल की बहर (छंद) में नहीं है अतः इन्हें ग़ज़लें नहीं कहा गया है। हालाँकि हिन्दी और उर्दू में लोग ग़ज़लें लिखते हैं और इन्हें ग़ज़लें कहते भी हैं परन्तु वे प्रायः बहर में नहीं होती हैं। इसीलिए मैंने इन्हें ग़ज़लें कहना उचित नहीं समझा।

पुस्तक को इस रूप में लाने में मेरे काव्य–गुरु डॉ0 रामाश्रय 'सविता' का पूरा आर्शीवाद मिला है। इसके अतिरिक्त श्री दयाशंकर अवस्थी 'देवेश', डॉ0 आमिर रियाज़ ने भी कुछ सुझाव दिये थे। मैं इनका हृदय से आभारी हूँ। इस पुस्तक में डॉ0 सत्यदेव मिश्र, प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, श्री विनोद चन्द्र पॉण्डेय, पूर्व सचिव, उ0प्र0 शासन एवं पूर्व निदेशक, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ एवं डॉ0 रामाश्रय सविता जी ने भूमिका लिखकर मुझे आशीर्वाद दिया है तथा डॉ0 नरेश कात्यायन ने मेरा परिचय लिखा है, मैं इन सबका हृदय से आभार प्रकट करता हूँ। मुझे राज्य कर्मचाारी साहित्य संस्थान एवं प्रतिष्ठा साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था के पदाधिकारियों, सदस्यों एवं अन्य मित्रों से भी प्रेरणा एवं मार्गदर्शन मिलता रहा है, मैं उन सबका कृतज्ञ हूँ। मेरी सहधर्मिणी श्रीमती पुष्पा अवस्थी मुझे गृह–कार्यों से मुक्त रखती हैं इसीलिए मैं कुछ साहित्य–साधना कर लेता हूँ। इसके लिए मैं उनका भी आभारी हूँ।

पुस्तक में जो त्रुटियाँ रह गई हों उनके लिए मैं क्षमा चाहता हूँ। सुधी पाठक एवं विज्ञ समीक्षक जिन त्रुटियों की ओर संकेत करेंगे, भविष्य में मैं उनमें सुधार अवश्य करूँगा। उनसे मेरा विनम्र निवेदन है कि वे अपने बहुमुल्य सुझावों एवं मार्ग दर्शन से मेरा साधना–पथ प्रशस्त करने की अनुकम्पा करें।

दिनेश चन्द्र अवस्थी

405/238, चौपटियाँ रोड,
लखनऊ।
दूरभाष – 267733

भावांजलि

शीर्षक **पृष्ठ**

आध्यात्मिक

नैतिक

जीवन–दर्शन

हास्य–व्यंग्य

आध्यात्मिक

ज्ञान दो माँ शारदे

अज्ञान लेकर ज्ञान दो, माँ शारदे !
अपनी कृपा का दान दो, माँ शारदे !

मैं कला औ' साहित्य में हूँ शून्य ही,
इस शून्य को पहचान दो, माँ शारदे !

सन्मार्ग से भटके नहीं यह लेखनी,
मेरी क़लम को आन दो, माँ शारदे !

बात मैं जो भी कहूँ सच–सच ही कहूँ ,
ऐसा मुझे अनुमान दो, माँ शारदे !

हों प्रभावित लोग सब मुझसे जो मिलें,
ऐसे गुणों की खान दो, माँ शारदे !

धर्म पर अपने रहूँ मैं दृढ़ सदा ही,
दृढ़ शक्ति औ' ईमान दो, माँ शारदे !

मोह माया–चक्र में नित नाचता हूँ,
मुक्ति का वरदान दो, माँ शारदें !

●

अहम क्यों है

तन में हम का पता नहीं, तो भला अहम क्यों है ?
ईश्वर विद्यमान कण–कण, तो भला भरम क्यों है ?

जिसने हमको जन्म दिया है, पाला पोसा है,
उसको शीश झुकाने में, फिर भला शरम क्यों है ?

जब विश्वास नहीं लोगों को, न्याय करे प्रभु जो,
तो ईश्वर है, इसे मानना, भला रसम क्यों है ?

कर्मों पर अधिकार तुम्हारा, फल पर नहीं मिला,
फिर तुमको कर्ता होने का, भला वहम क्यों है ?

ईश्वर से भी बड़ा अगर, विज्ञान समझते हो,
करो नियंत्रित सूरज को, वह भला गरम क्यों है ?

है अच्छाई अधिक बुराई से, अब भी तुम देखो,
अगर नहीं ऐसा दुनिया में, अभी रहम क्यों है ?

ईश्वर ने ही दी है प्रतिभा, कवि बन जाने की,
करना नहीं इबादत उसकी, हाथ–क़लम क्यों है ?

●

विश्वास करो

ईश्वर दे कर्मों का फल, विश्वास करो।
आज मिलेगा अथवा कल, विश्वास करो।

छीना झपटी से न अधिक मिलना है कुछ,
लेकिन कहाँ सुधरते खल, विश्वास करो।

बना न कोई सूत्र अभी तक जीने का,
हैं सुकर्म ही जीवन–फल, विश्वास करो।

काम न कोई छिपा–छिपाकर तुम करना,
नहीं सकोगे प्रभु को छल, विश्वास करो।

जब तक ताक़त है तन में उपकार करो,
किसे पता कब जाये ढल, विश्वास करो।

ये दुनिया ईश्वर की, केवल ईश्वर की,
सबका ही है वह संबल, विश्वास करो।

भागोगे प्रभु से पर, भाग न पाओगे,
ईश्वर का है नभ, जल, थल, विश्वास करो।

●

तेरे ही सहारे हैं

तू सरपरस्त सबका, तुझसे ही बहारें हैं।
परवरदिगार हम तो, तेरे ही सहारे हैं।

दुनिया में हमें धोखे, ग़म हार मिली लेकिन,
तुझपे है यकीं इससे, मन से न हम हारे हैं।

हम दूधधुले कब हैं ? शामिल हैं गुनाहों में,
अपना लो हमें, जो हैं, जैसे हैं, तुम्हारे हैं।

कुछ लोग तेरे दम से, तेरे नाम से जीते हैं,
हैं पास तेरे बेशक, पर वक़्त के मारे हैं।

हैं तेरी शरण में जब, तो फ़िक्र से क्या मतलब ?
तू है तो ये रंजोग़म, सब चाँद–सितारे हैं।

यदि तू कभी मिल जाये तो लोग यह पूछेंगे,
ज़ुल्मोसितम के भीतर क्या तेरे इशारे हैं ?

तेरी कृपा न होती तो ये भक्ति नहीं मिलती,
तेरी दया की ख़ातिर, हम हाथ पसारे हैं।

●

मैं क्या करूँ

भव सागर में फँसा हुआ, मैं क्या करूँ ?
कष्टों से हूँ घिरा हुआ, मैं क्या करूँ ?

छल–प्रपंच से भरी हुई इस दुनिया में,
अपने से ही डरा हुआ, मैं क्या करूँ ?

यों सत्पथ पर चलने का संकल्प लिया,
पहले पग पर रुका हुआ, मैं क्या करूँ ?

बहुमत को ही लोग प्रमाण मानते हैं,
भ्रम से बहुमत बना हुआ, मैं क्या करूँ ?

बड़े चाव से मैं संबंध निभाता हूँ,
लोग कहें सिरफिरा हुआ, मैं क्या करूँ ?

कुछ बुराइयाँ ऐसी जो छूटती नहीं,
पर उनपर ही फ़िदा हुआ, मैं क्या करूँ ?

अच्छे लोग यहाँ बिरले ही मिलते हैं,
हूँ तलाश में लगा हुआ, मैं क्या करूँ ?

●

तेरे ही सहारे हैं

तू सरपरस्त सबका, तुझसे ही बहारें हैं।
परवरदिगार हम तो, तेरे ही सहारे हैं।

दुनिया में हमें धोखे, ग़म हार मिली लेकिन,
तुझपे है यकीं इससे, मन से न हम हारे हैं।

हम दूधधुले कब हैं ? शामिल हैं गुनाहों में,
अपना लो हमें, जो हैं, जैसे हैं, तुम्हारे हैं।

कुछ लोग तेरे दम से, तेरे नाम से जीते हैं,
हैं पास तेरे बेशक, पर वक़्त के मारे हैं।

हैं तेरी शरण में जब, तो फ़िक्र से क्या मतलब ?
तू है तो ये रंजोग़म, सब चाँद–सितारे हैं।

यदि तू कभी मिल जाये तो लोग यह पूछेंगे,
ज़ुल्मोसितम के भीतर क्या तेरे इशारे हैं ?

तेरी कृपा न होती तो ये भक्ति नहीं मिलती,
तेरी दया की ख़ातिर, हम हाथ पसारे हैं।

●

मैं क्या करूँ

भव सागर में फँसा हुआ, मैं क्या करूँ ?
कष्टों से हूँ घिरा हुआ, मैं क्या करूँ ?

छल–प्रपंच से भरी हुई इस दुनिया में,
अपने से ही डरा हुआ, मैं क्या करूँ ?

यों सत्पथ पर चलने का संकल्प लिया,
पहले पग पर रुका हुआ, मैं क्या करूँ ?

बहुमत को ही लोग प्रमाण मानते हैं,
भ्रम से बहुमत बना हुआ, मैं क्या करूँ ?

बड़े चाव से मैं संबंध निभाता हूँ,
लोग कहें सिरफिरा हुआ, मैं क्या करूँ ?

कुछ बुराइयाँ ऐसी जो छूटती नहीं,
पर उनपर ही फ़िदा हुआ, मैं क्या करूँ ?

अच्छे लोग यहाँ बिरले ही मिलते हैं,
हूँ तलाश में लगा हुआ, मैं क्या करूँ ?

●

प्रभुजी कृपा करो

बहुत किए हैं पाप, प्रभुजी कृपा करो।
करुणामय हैं आप, प्रभुजी कृपा करो।

छूट न पाया अब तक, भ्रम के बन्धन से,
किया न पश्चाताप, प्रभुजी कृपा करो।

तुमने पैदा किया और पाला–पोसा,
सबके हो माँ–बाप, प्रभुजी कृपा करो।

पता नहीं क्या सज़ा मिलेगी पापों की,
सभी रहे हैं काँप, प्रभुजी कृपा करो।

सब भक्तों की करते चिन्ता हरदम ही,
हरते दुख चुपचाप, प्रभुजी कृपा करो।

कितने किए उपाय न संयम मन पर है,
सहने होंगे ताप, प्रभुजी कृपा करो।

बुद्धि–शक्ति दो ऐसी, तेरा ध्यान करें,
मिटें ताप–संताप, प्रभुजी कृपा करो।

●

उद्धार करो

मेरे प्रभु दुर्बल मानव पर, इतना भी उपकार करो।
हो जाओ नाराज़ किसी से, तो उसका इज़हार करो।

करनी का फल मिले शीघ्र तो, पाप मिटें इस दुनिया से,
करके न्याय शीघ्र–सच्चा, इस दुनिया को गुलज़ार करो।

हो प्रतिमूर्ति दया की माना, लोगों को विश्वास नहीं,
करके ख़ता माफ़ हम सबकी, करुणा का विस्तार करो।

कारण भी तो हमें बताओ, इतने क्यों दुखदर्द दिए ?
एक मात्र रक्षक दुखियों के, इस पर सोच–विचार करो।

शिशु के जन्म–साथ ही उसको, पीना दूध सिखाया है,
जीना हमें सिखाया है तो, जीवन–नैया पार करो।

हम हैं सिर्फ़ सहारे तेरे, टूटा भी विश्वास नहीं,
करना कुछ भी नहीं अगर तो, साफ़–साफ़ इन्कार करो।

अच्छे और बुरे हैं जैसे, हैं तो महज़ तुम्हारे ही,
आये शरण तुम्हारी हम जब, किसी तरह उद्धार करो।

●

क्या मैंने ख़ता की है

सुनते नहीं आवाज़, क्या मैंने ख़ता की है ?
क्यों हो गये नाराज़, क्या मैंने ख़ता की है ?

जो भी दिखाई राह, मैं उस पर चला हूँ,
क्यों कर दिया मोहताज़, क्या मैंने ख़ता की है ?

कर्मों का, भोग का क्रम, कोई समझ न पाया,
अब तक न खुला राज़, क्या मैंने ख़ता की है ?

ब्रह्मांड का रहस्य, क्या हल कभी न होगा ?
बौने मेरे अंदाज़, क्या मैंने ख़ता की है ?

तेरे ही इशारे पे, मैं चलता चला आया,
क्यों किया नज़रअंदाज़, क्या मैंने ख़ता की है ?

वो दूर–दूर रहते, कहने से भी नहीं सुनते,
रूठे हैं क्यों सरताज ? क्या मैंने ख़ता की है ?

इससे भी पहले तूने, बहुतों को उबारा है,
कर दो कृपा महराज, क्या मैंने ख़ता की है ?

●

सृष्टि मिलती नहीं

बिना प्रभु–कृपा, भक्ति मिलती नहीं।
बिना भक्ति के, शक्ति मिलती नहीं।

सदा कर्म करना, अच्छे ही तुम,
बिना स्वच्छ मन, मुक्ति मिलती नहीं।

है कर्तव्य–पालन, सद्–धर्म–पथ,
बिना धर्म के, तृप्ति मिलती नहीं।

सदा सच नहीं वो, जो आँखों दिखा,
बिना गुरु–कृपा, दृष्टि मिलती नहीं।

अपनी इच्छाएँ सीमित करो मित्र तुम,
किसी व्यक्ति को, सृष्टि मिलती नहीं।

पिछले जन्मों के सम्बन्ध से हम मिले,
अनायास, अनुरक्ति मिलती नहीं।

करो साधना इष्ट की नित्य तुम,
बिना साधना, सिद्धि मिलती नहीं।

●

प्रभु में ध्यान लगाना है

माया मोह छोड़ के, प्रभु में ध्यान लगाना है।
वक़्त गया सो गया, न आगे और गँवाना है।

दुनिया में हैं, इतने झंझट, कभी कम न होंगे,
कुछ भी हों, कैसे हों, उनमें भटक न जाना है।

दौलत के चक्कर में पड़ना ठीक नहीं होता,
ज्यादा दौलत होना, सुख की नींद गँवाना है।

यहाँ भले बन कर रहना, तो कष्ट उठाना है,
प्रभु पर यदि विश्वास, उसे फिर क्या घबराना है ?

दुख–सुख कुछ भी मिले, समय निकल जायेगा ही,
लो शरीर से काम, अन्ततः मिट ही जाना है।

कहाँ से आये, कहाँ को जाना, जीवन मिलता क्यों?
हम सबको बस, इस सत्य का पता लगाना है।

काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, आलस ही हैं दुश्मन,
इन सबको वश में कर, सच्चा पथ अपनाना है।

●

तू मिल जाये

मेरे पापों की सजा, मिल जाये।
जिससे अगला जनम, सँभल जाये।

प्रकृति के नियम कभी बदलते नहीं,
कैसे कर्मों का ही फल, टल जाये ?

आदमी हो गया मक्कार बहुत,
वश चले तो ख़ुदा को, छल जाये।

अच्छे कामों में भला देरी क्यों ?
सोचते ज़िन्दगी ही न, ढल जाये।

आदमी पाप सदा करता रहता,
करे प्रायश्चित तो पाप, धुल जाये।

कर्म का, भाग्य का फल ज्ञात नहीं है,
कृपा हो प्रभु की तो पता, चल जाये।

ज़िन्दगी में न ज्यादा ख़्वाहिश है,
चाहता इतना हूँ कि तू, मिल जाये।

●

ख़ुद से तो बात करो

सबसे बातें करते हो, ख़ुद से तो बात करो।
औरों पर आघात कभी, ख़ुद पर आघात करो।

काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ भटकाते रहते हैं,
फटक न पायें पास, बुद्धि–विवेक तैनात करो।

माया से छूटे तन, तब आत्मा से हो मिलना,
आत्मलीन हो करके, तुम प्रभु से साक्षात् करो।

हम सब हैं प्रभु के, उसके अंश से ही हैं निर्मित,
ईश भक्ति औ'तप से,ज्ञान का सुखद प्रभात करो।

हाथ पैर ढीले करने से काम नहीं होता,
धर्म–कर्म करो और, काबू भी जज़्बात करो।

प्रभु! तुमको तो दयावान, हरदम है कहा गया,
रहम–करम की मुझपर भी तो, कुछ बरसात करो।

इंतिजाम कितना सुन्दर, दुनिया में रहने का,
मरने पर सद्गति हो, द्वार मोक्ष का ज्ञात करो।

●

तेरा नाम लिए जायेंगे

ऐ मेरे ख़ुदा! कितने ही ग़म दे, हम सब्र किए जायेंगे।
घुट–घुट के तेरी यादों में ही, हम रोज़ जिए जायेंगे।

जो कदम बढ़े तेरी राहों पर, ये कदम भटक सकते नहीं,
सब कष्ट सहेंगे हँस–हँस के, तेरा नाम लिए जायेंगे।

मक्कारी, ठगी नहीं सीखी, उस ओर न मेरा ध्यान गया,
हमको तू कितना भी तरसाये, बरदाश्त किए जायेंगे।

दुनिया में सच का ज़ोर नहीं, लगता यह एक गुनाह बना,
जो भी सच बोलेगा लगता, उसके होंठ सिए जायेंगे।

अपने अंदर जो बैठा है, अब लोग न उसकी सुनते हैं,
बाहर के दिखावे को ही अब, सम्मान दिए जायेंगे।

दुष्टों से बचाना भक्तों को, तेरी टेक पुरानी कहते हैं,
क्या हम ही अभागे, दुनिया से यों हारें जायेंगे?

शैतान अगर हावी हो तो, यों घबरा जाना ठीक नहीं,
आएगी मुसीबत तुम पर तो, हम साथ दिए जायेंगे।

●

ईमान बेच के धन कमाना मत

कभी किसी का दिल दुखाना मत।
किसी कमज़ोर को सताना मत।

आयें कितनी मुसीबतें तुम पर,
हारना या कभी घबराना मत।

ईश्वर, मृत्यु और आत्मा सच हैं,
तर्क के जाल से झुठलाना मत।

ईमान सबसे बड़ी न्यामत है,
इसको बेच के धन कमाना मत।

बात कहनी हो तो कहो सच–सच,
झूठ बोल कर मुँह छिपाना मत।

हर समय ही बोलना ठीक नहीं,
ज़रूरी बात में शर्माना मत।

कष्ट सहने पड़ें तमाम, सह लो,
भले आदमी को रुलाना मत।

●

मन का मंदिर

धन दौलत तो जाये–आये, टूट न जाये मन का मंदिर।
अपना काम बिगड़ भी जाये, टूट न जाये मन का मंदिर।

मानवता की पूजा करनी, पीर सभी की मुझको हरनी,
मन मेरा ये फिर–फिर गाये, टूट न जाये मन का मंदिर।

ईश्वर को हैं अपने प्यारे, उनके संकट सदा निवारें,
नंगे पैर कृष्ण जी धाये, टूट न जाये मन का मंदिर।

पैग़म्बर औतार कहो या फिर ईश्वर का अंश कहो,
वह अनुपम संदेशा लाये, टूट न जाये मन का मंदिर।

माँ–बहनें सब आदि शक्ति हैं, ममता, समता त्याग–भक्ति हैं,
अपने दुख को रहें छिपाये, टूट न जाये मन का मंदिर।

छिपी हुई एकता देश की, हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख–नीति में,
सबकी वाणी से ध्वनि आये, टूट न जाये मन का मंदिर।

देशभक्ति, मानव सेवा भी, है उपासना ईश्वर की ही,
यही भावना सबको भाये, टूट न जाये मन का मंदिर।

●

शिकायत नहीं है

कष्ट है किन्तु प्रभु से शिकायत नहीं है।
किसी से भी उसकी अदावत नहीं है।

दुनिया में उनको नहीं कोई पूछे,
कि जिन पर तुम्हारी इनायत नहीं है।

वही वार पीछे से करते हमेशा,
वजह उनमें लड़ने की ताक़त नहीं है।

यहाँ सबका सम्मान होना ज़रूरी,
ये दुनिया किसी की रियासत नहीं है।

सही काम की कोई क़ीमत न होती,
अगर उसकी होती ख़िलाफ़त नहीं है।

सफलता मिले सदा जीवन में कैसे ?
तपस्या है जीवन, तिजारत नहीं है।

गुनाहों–भरी ज़िन्दगी यदि हमारी,
अमानत में क्या ये ख़यानत नहीं है ?

●

हम अंदर–अंदर लड़ते हैं

अच्छे को तो देव, बुरे को राक्षस ही सब कहते हैं।
साथ–साथ ये दोनों ही तो, मेरे अन्दर रहते हैं।

देव–दानवों ने निजहित में, गढ़े हुए हैं तर्क–वितर्क,
दोनों अपनी–अपनी बातें, सदा सही ही कहते हैं।

अपने अन्दर के राक्षस पर, शर्म हमेशा आती है,
यथा कुपुत्र–कृत्य को परिजन, घुटते–घुटते सहते हैं।

कभी–कभी हम खुद ही अपनी, नज़रों से गिर जाते हैं,
मन मसोस कर रह जाते हैं, नहीं किसी से कहते हैं।

मित्र–शत्रु के साथ बनाते हैं, ये रिश्ते अलग–अलग।
अपने रिपुओं से, मित्रों से, ये अलग–अलग ही मिलते हैं।

हम खुद अपने दोस्त और दुश्मन हैं अपनी आदत से,
इसीलिए तो, हम अपने से, अन्दर–अन्दर लड़ते हैं।

तन थकता है, मन थकता है, थक जाता है पौरुष भी,
पर हम अपनी इच्छा की गठरी, ढोते कभी न थकते हैं।

●

हँसते रहो

हो सके तो दीप बन जलते रहो।
और सबकी पीर नित हरते रहो।

आज कड़ुवाहट भरे इस दौर में,
हँसाओ सबको औ' ख़ुद हँसते रहो।

तुम करो उपकार सबका नित्य ही,
साथ मृदु व्यवहार भी करते रहो।

फल मिलेगा एक दिन अच्छा तुम्हें,
सत्यता की राह पर चलते रहो।

ज़िन्दगी में एक दिन मरना नियत,
क्या ज़रूरी रोज़ ही मरते रहो ?

वस्तु जो तुमको कभी मिलनी नहीं,
फ़ायदा क्या रात दिन कुढ़ते रहो ?

फूल सी यदि ज़िन्दगी जीनी तुम्हें,
हर दिल में तुम सुगन्ध भरते रहो।

●

नैतिक

ग़ज़ल दिखती है

मुझे ग़रीब की आहों में ग़ज़ल दिखती है।
मुझे रफ़ीक़ की बाँहों में ग़ज़ल दिखती है।

मुझे न चाहिए हुस्न–ओ–शराब या दौलत,
मुझे तो अपने ख़्यालों में ग़ज़ल दिखती है।

उनके मिलते ही मिल जातीं हमारी नज़रें,
मुझे उन्हीं की निगाहों में ग़ज़ल दिखती है।

दर्द को देख, न हो दर्द, तो लिखना कैसा ?
मुझे दुखियों की कराहों में ग़ज़ल दिखती है।

ये ख़्वाहिशें हैं, कराती हैं न जाने क्या–क्या,
मुझे तो शोख़ अदाओं में ग़ज़ल दिखती है।

बेरुख़ी से मुझे होती है कुछ तड़प इतनी,
मुझे ग़मगीन फ़िज़ाओं में ग़ज़ल दिखती है।

अपना उसूल ये है कि धर्म पर चलना है,
मुझे तो सत्य की राहों में ग़ज़ल दिखती है।

●

कर्मठ कभी न थकते

लोग मुफ़लिसी में जो रहते।
वो अनगिन पापों से बचते।

तुम कर्मों को धर्म बना लो,
जो कर्मठ, वे कभी न थकते।

अधिक न दौलत अच्छी होती,
शंकित सदा धनी हैं रहते।

छोटों को तुम हीन न समझो,
प्रभु छोटों में ही नित मिलते।

फलती सदा कमाई गाढ़ी,
इससे पले लोग ही बढ़ते।

अच्छे एक बार ही मरते,
बुरे लोग रोज़ाना मरते।

जिनके ख़ाली पेट, दौड़ते,
भरे पेट बैठे ही रहते।

●

इंसाफ़ नहीं मिलता है

आज कमज़ोर को इंसाफ़ नहीं मिलता है।
धीमी आवाज़ को अब कोई नहीं सुनता है।

दुनिया में कटते हैं हरदम कमज़ोर शख़्स,
शक्तिशाली का गला कभी नहीं कटता है।

सबको दुख देकर शैतान को आता है मज़ा,
किसी के सुख से उसे चैन नहीं मिलता है।

बद भी कहता है कि प्रभु में है विश्वास उसे,
किन्तु वह उसकी तरफ़ कभी नहीं बढ़ता है।

चूर हो गुरूर में उसे कैसे समझाएँ ?
सही बात को वो कभी नहीं समझता है।

कुछ कमियाँ देखकर किसी को बुरा मत कहो,
आदमी आदमी है, वो नहीं फ़रिश्ता है।

न जाने आदमी किस पर घमंड करता है,
बदन में अहम कहीं उसके नहीं मिलता है।

●

कर्मठ कभी न थकते

लोग मुफ़लिसी में जो रहते।
वो अनगिन पापों से बचते।

तुम कर्मों को धर्म बना लो,
जो कर्मठ, वे कभी न थकते।

अधिक न दौलत अच्छी होती,
शंकित सदा धनी हैं रहते।

छोटों को तुम हीन न समझो,
प्रभु छोटों में ही नित मिलते।

फलती सदा कमाई गाढ़ी,
इससे पले लोग ही बढ़ते।

अच्छे एक बार ही मरते,
बुरे लोग रोज़ाना मरते।

जिनके ख़ाली पेट, दौड़ते,
भरे पेट बैठे ही रहते।

●

इंसाफ़ नहीं मिलता है

आज कमज़ोर को इंसाफ़ नहीं मिलता है।
धीमी आवाज़ को अब कोई नहीं सुनता है।

दुनिया में कटते हैं हरदम कमज़ोर शख़्स,
शक्तिशाली का गला कभी नहीं कटता है।

सबको दुख देकर शैतान को आता है मज़ा,
किसी के सुख से उसे चैन नहीं मिलता है।

बद भी कहता है कि प्रभु में है विश्वास उसे,
किन्तु वह उसकी तरफ़ कभी नहीं बढ़ता है।

चूर हो गुरूर में उसे कैसे समझाएँ ?
सही बात को वो कभी नहीं समझता है।

कुछ कमियाँ देखकर किसी को बुरा मत कहो,
आदमी आदमी है, वो नहीं फ़रिश्ता है।

न जाने आदमी किस पर घमंड करता है,
बदन में अहम कहीं उसके नहीं मिलता है।

●

मान जाइये

अपने ग़मों को कभी–कभी, भूल जाइये।
औरों के ग़मों को भी कभी तो, बँटाइये।

अच्छा लगेगा ख़ुद भी हँसो और हँसाओ,
वाजिब है कितनी बात मेरी, मान जाइए।

सब लोग तुम्हें प्यार से अपनाने लगेंगे,
ये स्वार्थ–अहम पहले कहीं, छोड़ आइए।

हर तरह के हैं आदमी अपने समाज में,
पहचान कर ही किसी को, अपना बनाइये।

मिलती है ख़ुशी कितनी, कभी कोई मनाये,
अपनों से रूठ जाइये, कहिये मनाइये।

सच्चा अगर प्यार नहीं, तो ज़िन्दगी है क्या?
करिए किसी को प्यार और, प्यार पाइए।

आता है मज़ा हारने में भी क़भी–कभी,
क्या लुत्फ़ है! बच्चों से कभी, हार जाइए।

●

अच्छा नहीं होता

ख़ुद पर ग़ुरूर करना, अच्छा नहीं होता।
औ' रोज़–रोज़ मरना, अच्छा नहीं होता।

होता न हो सम्मान तुम्हारा जहाँ कहीं,
उस जगह पर ठहरना, अच्छा नहीं होता।

क़िस्मत से, कर्म से, फल मिलता है सबको,
किसी को दोष देना, अच्छा नहीं होता।

जिस चीज़ के पाने के हो योग्य नहीं तुम,
उस चीज़ पर मचलना, अच्छा नहीं होता।

आया है पास कोई, अपना ही समझ कर,
उसको कभी झिड़कना, अच्छा नहीं होता।

कोई किसी को जल्दी पहचान न सकता,
बातों से पिघल जाना, अच्छा नहीं होता।

सब लोग अपनी क़िस्मत के साथ यहाँ आते,
किसी को देख के जलना, अच्छा नहीं होता।

●

क्या कभी ऐसा भी

क्या कभी ऐसा भी जहान होगा?
जब यहाँ जीना आसान होगा।

जो सदा सबकी फ़िक्र करता हो,
क्या कोई ऐसा फ़िक्रदान होगा ?

प्यार ही प्यार जो लुटाता चले,
क्या कभी ऐसा इंसान होगा ?

आज सच्चों की कोई क़द्र नहीं,
सत्यवादी स्वरूप भगवान होगा।

अच्छा इंसान ढूँढ़ने निकला,
क्या पता हर जगह शैतान होगा।

ये व्यवस्था समझ में न आई है,
भक्तों पर प्रभु! कब मेहरबान होगा ?

दुष्टों की शक्ति बढ़ती ही रही,
तो उनको अधिक अभिमान होगा।

●

ख़ूब शान से

जीनी है ज़िन्दगी तो, जियो ख़ूब शान से।
करना है कोई काम, करो ख़ूब शान से।

बनता है स्वर्ग वहाँ, जहाँ होती रिहाइश,
इसलिए रहो जहाँ, रहो ख़ूब शान से।

है बात ही ईमान–धर्म, आन–बान भी,
इसलिए करो बात, करो ख़ूब शान से।

जिससे भी करो दोस्ती, वो कम कभी न हो,
दुश्मन भी गर बनो तो, बनो ख़ूब शान से।

ज़िन्दगी में झंझटें आयेंगी रोज़–रोज़,
हर हाल में तुम डटे रहो, ख़ूब शान से।

दुख–दर्द तो जीवन के साथ–साथ रहेंगे,
तुम चलते उसूलों पे रहो, ख़ूब शान से।

हर आदमी में कमियाँ होनी हैं लाज़िमी,
इनको सदा स्वीकार करो, ख़ूब शान से।

●

समझदारी ज़रूरी है

जीने के लिए, समझदारी ज़रूरी है।
जीवन में सबके, ख़ुद्दारी ज़रूरी है।

गड्ढे में धँसा जा रहा समाज आज,
बचाने के लिए, ईमानदारी ज़रूरी है।

अन्याय सहकर चुप बैठना क्या ठीक है ?
अन्याय नष्ट हो, चिनगारी ज़रूरी है।

कौन कहता है कि ईश्वर मिलता नहीं है ?
उसे पाने की बेक़रारी ज़रूरी है।

सीधे बनके रहो साथ ही सतर्क रहो,
आज के युग में, होशियारी ज़रूरी है।

आज आदमी को तैश बहुत आता है,
निभाने के लिए, ग़मख़्वारी ज़रूरी है।

मुझे दुनिया में नहीं और कुछ चाहिए,
मेरे लिये मोहब्बत, तुम्हारी ज़रूरी है।

●

असली वीर कहाता

जो वश में कर लेता मन को, असली वीर कहाता।
सबके दुख को हँस हरने वाला, असली पीर कहाता।

सह करके अपमान बैठ जाना न धीरता होती,
पीड़ा में भी जो मुस्काता, असली धीर कहाता।

सागर में यों तो जल भरा हुआ है अथाह,
सबकी प्यास बुझा देता जो, असली नीर कहाता।

क्षीर भरा होता है वैसे तो मदार–पौधे में,
जिसको पीकर जीवन बढ़ता, असली क्षीर कहाता।

सोच समझकर देखभाल कर करता है जो हमला,
बैठ निशाना जाता जिसका, असली तीर कहाता।

यूँ तो सागर का तीर असीमित ही होता है पर,
शान्ति मिले जिस जगह वही तो, असली तीर कहाता।

वीरों को है शोभा देता, पीछे कभी न मुड़ना,
आगे बढ़कर शीश कटाये, असली मीर कहाता।

●

दस्तूर निराले हैं

इस ज़ालिम दुनिया के, दस्तूर निराले हैं।
अच्छों को भटकना है, दुश्वार नेवाले हैं।

अच्छों को यहाँ कोई, हैं दोस्त नहीं मिलते,
सच दोस्ती उन्हीं की, पकड़े हुए प्याले हैं।

होंठों पे हँसी उनके, जिनके यहाँ दौलत है,
उनपे निग़ाह क्यों, जो ग़ुर्बत के हवाले हैं ?

मुझसे न हाल पूछें, चलते जो उसूलों पे,
रहते, ज़रूर घर में, पर देशनिकाले हैं।

अब तुमसे क्या बतायें, इस दिल का हाल क्या है,
कहने को धड़कता है, साँसों के कसाले हैं।

दिल जोड़ने की बातें, बेइन्तिहा जो करते,
ये समझ लें कि मतभेद, उनके ही उछाले हैं।

यह प्रजातंत्र शासन, होता यहाँ यही है,
इस देश की मतवाले ही, डोर सँभाले हैं।

●

सूरत बदलनी चाहिए

देश की हालत है जो, अब वह बदलनी चाहिए।
एकता की ही पताका, अब फहरनी चाहिए।

धर्म, भाषा, जाति, वर्गों की लड़ाई चल रही,
व्यर्थ की है ये लड़ाई, जो ठहरनी चाहिए।

जिनसे आज़ादी मिली हम भूलते उनको गये,
याद उन सेनानियों की, दिल से करनी चाहिए।

हमको रहना साथ है, मतभेद से मतलब नहीं,
जिस किसी सूरत से हो, सूरत बदलनी चाहिए।

सारे मज़हब एक से उनमें न कोई फ़र्क है,
इसलिए मतलबभरी, भाषा बदलनी चाहिए।

तेलगू, उर्दू, तमिल के संग अंग्रेजी पढ़ो,
हिन्दी तो अनिवार्यतः, हम सबको पढ़नी चाहिए।

संकट में देश हो जब, इज़्ज़त पे आँच आये,
बलिदान के लिए तब, तबियत मचलनी चाहिए।

●

मुलाक़ात होगी

तुमसे कभी तो मुलाक़ात होगी।
तब आमने–सामने बात होगी।

तड़पा हूँ कितना तुम्हारी झलक को,
मिल जाओ तो, एक सौगात होगी।

शायद तुम्हें शर्म लगती है दिन में,
न शिकवा मुझे, बाद में रात होगी।

आओगे तुम छोड़ करके सभी को,
कभी न कभी यह करामात होगी।

हिम्मत कभी भी न छोड़ूँगा वरना,
शैतानियत से खरी मात होगी।

अभी कोई मेरी नहीं सुन रहा है,
मगर एक दिन साथ बारात होगी।

मैं प्यार दूँगा तभी प्यार लूँगा,
नहीं तो मिला प्यार ख़ैरात होगी।

●

जीवन-दर्शन

सीख लो

इन बोलती आँखों से, बात करना सीख लो।
दिल की धड़कनों को भी, समझना सीख लो।

इस मानव से बड़ी, कोई भी किताब है क्या ?
इसको ज़रा सलीक़े से, पढ़ना सीख लो।

दब न जाए पैरों तले, कोई भी चीज़;
इसलिए सँभल कर, क़दम रखना सीख लो।

फ़ुर्सत किसे है तुम्हें, वह समझे ठीक से,
इसलिए दूर से भी, प्यार करना सीख लो।

कहने के तरीक़े से, अर्थ बदलता है,
इसलिए तोलकर, बात कहना सीख लो।

हर एक सुख में, दुख का आगमन है छिपा,
सुख भोगने से पहले, दुख सहना सीख लो।

कुछ भी न सीख पाए, तो फ़िक्र मत करना,
तुम आदमी से बस, प्यार करना सीख लो।

●

कैसे हुए सयाने लोग

कैसे हुए सयाने लोग।
कितना चलें उताने लोग।

मानवता की बात नहीं,
पैसे को ही मानें लोग।

सता–सता महिलाओं को,
बनते हैं मर्दाने लोग।

दौड़ रहे तृष्णा के संग,
कैसे हैं दीवाने लोग।

जहाँ कहीं ईमान दिखे,
उलटे देते ताने लोग।

जिनकी सुनते थे पहले,
उनको लगे सुनाने लोग।

जो चाहे सेवा ले लो,
खोले हैं दूकानें लोग।

●

ज़िन्दगी है सामने

ज़िन्दगी है सामने, तुम सब नज़ारे देख लो।
गर्दिशों का दौर हो तो, सब सहारे देख लो।

देखते ही देखते कहाँ आ पहुँचा समाज,
कैसी–कैसी पड़ गई हैं, ये दरारें देख लो।

हम बढ़े आगे बहुत, इतनी तरक़्क़ी कर गए,
तन सजे–सँवरे हैं लेकिन, मन उघारे देख लो।

चाहते सम्मान पाना, महल से उतरो चलो,
लोग कितनी ललक से, बाँहें पसारे देख लो।

काम करते हम जहाँ, रिश्वत नहीं चलती वहाँ,
यदि न हो विश्वास, तो तुम घर हमारे देख लो।

जो है हल्का काठ जैसा, डूबता है वह नहीं,
चाहते यह देखना, सरिता किनारे देख लो।

जहाँ भी देखो ख़ुदा है, है ख़ुदा, केवल ख़ुदा
आजमाने हेतु क़ुदरत के इशारे देख लो।

●

हौसला हो अगर

हौसला हो अगर, मंज़िल पास दिखती है।
हौसला हो पस्त, मंज़िल दूर लगती है।

ठान लें मन में अगर, तो है कठिन कुछ नहीं,
कोशिशें करते रहें, हर राह मिलती है।

पालता है पौध माली, एक बच्चे की तरह,
एक दिन उस वृक्ष में, नव कली खिलती है।

काम छोटा या बड़ा, ध्यान से करना सदा,
भले पूरा हो न हो, किन्तु तुष्टि मिलती है।

ज़िन्दगी में आलसी, कुछ कर पाते नहीं,
इसलिए यह ज़िन्दगी भी, उन्हें खलती है।

निविड़ तम देखकर भी, तुम घबराना नहीं,
क्योंकि तम के बाद, सुन्दर किरण खिलती है।

सफल जीवन का, न कोई सूत्र बन पाया,
'खुश रहो, सत्कर्म करो', ये बात जँचती है।

●

प्रतिफल आशा

प्रतिफल आशा भूल है।
सकल दुखों का मूल है।

करते हो उपकार अगर,
समझो प्रभु अनुकूल है।

डरो नहीं तुम दुःखों से,
साथ फूल के शूल है।

महको अपने कर्मों से,
जीवन सुन्दर फूल है।

कैसा आया समय सखे !
उड़े चमन में धूल है।

जंगल कैसे समझोगे ?
भोगा नहीं बबूल है।

बीच धार में क्या चिन्ता ?
तैरो पास दुकूल है।

●

तेरी दुनिया

तेरी दुनिया का ख़ुदा ! क्या अजीब रंग है।
सबका अपना अलग ही, जीने का ढंग है।

कोई ख़ुद से कोई दूसरे से लड़ता है,
ये दुनिया तो कुछ नहीं, महज़ एक जंग है।

औरों के लिए नहीं, अपने हित जीते हैं,
इस ज़हीन आदमी का, **दिल** कितना तंग है।

बड़े–बड़े होटल हैं, महल हैं, दुमहले हैं,
अंदर से देखिए, कितने बदरंग हैं।

ताक़त के ज़ोर से जो चाहते करवा लो,
उसी का ज़माना है, जो जितना दबंग है।

ज़िन्दगी में घमंड करना ठीक नहीं होंता,
यह सदा चढ़ती–गिरती–कटती पतंग है।

सभी तो नशे में हैं, किसकी क्या बात करें ?
सभी कुओं में जैसे, पड़ी हुई भंग है।

●

प्यारी ज़िन्दगी

ज़िन्दगी अपनी देखो, कितनी प्यारी है।
ग़मों से भरी हुई, फिर भी ये न्यारी है।

बड़ा हुआ, लेकिन किसी को कुछ न दे सका,
भरा समन्दर भले, पानी तो खारी है।

सतयुग, त्रेता, द्वापर युग हैं बीत गये,
होंगे कुछ, पर अब तो कलियुग की बारी है।

ख़ुदा के बंदे हो तो, बंदों से प्यार करो,
फिर देखो, ये सारी दुनिया तुम्हारी है।

मुझसे जब चाहो, जितना चाहो ले लो,
मेरा तो कुछ नहीं, ये जाँ भी तुम्हारी है।

ये ज़मीन है, जिसने हम सबको पाला है,
इसके प्रति भी हम सबकी ज़िम्मेदारी है।

ईमानदारों का अब काम चले कैसे ?
हर तरफ़ ही हवा बहती भ्रष्टाचारी है।

●

ज़िन्दगी का हल

कर्म करना ज़िन्दगी का हल शायद।
नहीं अच्छी और कोई गल शायद।

काम अच्छा आज ही फ़ौरन करो,
नहीं आता ज़िन्दगी में कल शायद।

है मुसीबत सामने भयभीत क्यों ?
कोशिशों से जायेगी वह टल शायद।

है सभी कुछ पास पर शांति ग़ायब,
ज़िन्दगी से ही किया है छल शायद।

कर्म करने का मिला अधिकार है,
कर्म ही हैं ज़िन्दगी का फल शायद।

स्वर्ण कल था आज मिट्टी हो गया,
दौड़ता तन में प्रभु का बल शायद।

है घमंड तुम्हें भला किस बात का ?
है नहीं अपना एक भी पल शायद।

●

ज़िन्दगी

ज़िन्दगी तो इक सुनहरा ख़्वाब है।
जिसका हो न पाया कभी हिसाब है।

कुछ को अपनी ज़िन्दगी लगती बुरी,
कुछ को लगती ज़िन्दगी नायाब है।

ज़िन्दगी को कोई भी समझा नहीं,
ज़िन्दगी सबसे मुश्किल किताब है।

जीना अपने ही लिए, जीना नहीं,
दूसरों के लिए जिएँ, सबाब है।

ज़िन्दगी में प्यार ही तो मधुरतम,
यह नहीं, तो ज़िन्दगी तेज़ाब है।

मौज–मस्ती में लगे रहते हैं लोग,
वे समझते ज़िन्दगी असबाब है।

नेक नीयत पर भरोसा है जिन्हें,
उन्हें दिल से अर्ज़ ये आदाब है।

●

ख़ुश रहो

ख़ुश रहना भी एक कला है।
इसमें सबका हुआ भला है।

बात–बात में रूठे रहना,
कभी–कभी तो बहुत खला है।

जीवन में वो कैसे ख़ुश हो ?
ईर्ष्या में जो नित्य जला है।

लुटे हुए हैं फिर भी ख़ुश हैं,
अपनों ने ही उन्हें छला है।

दुख उसका कुछ क्या कर लेंगे?
जो कष्टों में पला–ढला है।

अहम किसी का कभी न टिकता,
बर्फ समान सदैव गला है।

उसको ही तो सुयश मिला है,
श्रम–पथ पर जो रोज़ चला है।

●

सहना अच्छा

बन जाये नासूर राज़, इससे पहले कहना अच्छा।
कायर बन करके जीने से, है लड़ते रहना अच्छा।

बहस नदी तालाब बीच, तब कहा नदी ने धीरे से,
एक जगह ठहरे रहने से, है प्रतिपल बहना अच्छा।

धरे हाथ पर हाथ रहे, तो ऐसा जीना क्या जीना ?
नागवार बेगार भले हो, फिर भी है करना अच्छा।

अलस्सुबह उठ करके चिड़ियाँ, सबसे ही यह कहती हैं,
सुबह हो गई है ऐ लोगो! अब तो है उठना अच्छा।

बेपेंदी का लोटा बनने से, हासिल क्या होना है ?
कुछ भी हो, सदा उसूलों पर, है क़ायम रहना अच्छा।

छोटी–छोटी बातों पर है, लड़ना–भिड़ना ठीक नहीं,
गुस्से पर क़ाबू पा लेना, हर दम है सहना अच्छा।

भारत के सब धर्म–ग्रन्थ, हरदम समझाते आये हैं,
गुलाम बन कर जीने से तो, होता है मरना अच्छा।

●

कैसी है ये दुनिया

पैदा हुए स्वतंत्र, किन्तु आज हम गुलाम।
कैसी है ये दुनिया, इसे करूँ मैं सलाम।

बंधन समाज के पड़े, कोई नहीं स्वतंत्र,
बनाये ऐसे नियम, जिनका नहीं है काम।

ख़ुद ही बना डाले बंधन इस आदमी ने,
अब सिर पकड़ ज़ोर से, चिल्लाता हाय राम।

शोषण का रहा, दुनिया में ज़ोर हमेशा,
कमज़ोर आदमी, पिटता रहा सरेआम।

क़ानून बनाये हैं बड़ों ने ही हमेशा,
जिनसे हुआ कमज़ोर का, जीना यहाँ हराम।

ऐसी भी ज़िन्दगी क्या, जिसमें नहीं उसूल,
हम स्वार्थ के लिए ही, करने लगे प्रणाम।

बोलेगा सत्य कोई, तो मार खायेगा,
झूठा हँसे पर अंत में, गिरता रहा धड़ाम।

●

आबोहवा

है समाज की बदल रही, आबोहवा।
देखो कैसे मचल रही, आबोहवा।

गंगा–यमुनी तहज़ीब सहेजे लखनऊ,
अब क्यों इससे फिसल रही, आबोहवा ?

उनका घर यदि बचा, न बचने पाएगा,
घर में ही तो टहल रही, आबोहवा।

आसमान को छूने का संकल्प लिए,
देखो कैसे उछल रही, आबोहवा।

बेटे को जब नहीं बाप की बात जँचे,
तो समझो इसकी बदल रही, आबोहवा।

ओल्ड–गोल्ड होता है अक्सर सुनते हैं,
आज ओल्ड को निगल रही, आबोहवा।

चलती आई और रहेगी चलती यह,
नहीं किसी से सँभल रही, आबोहवा।

●

क्या किया जाये

यहाँ फ़रेब है हर ओर, क्या किया जाये ?
दिले नादान कहीं और, क्या चला जाये ?

ज़िन्दगी दी है गुज़ार सिर्फ़ अपने ही लिए,
औरों के लिए अब काम, कुछ किया जाये।

होना तो चाहिए हर आदमी के लिए,
सिर्फ़ ईमान रहे, चाहे सब चला जाये।

ख़ुद सुधरना है, सबको सुधारना मुश्किल,
इसी उसूल पर अब तो, अमल किया जाये।

ज़माना बदला पर हम नहीं बदल पाये,
बोलो इस दौर में किस ढंग से जिया जाये ?

इस क़दर फैला प्रदूषण है कि दम घुटता है,
अब किसी और ही दुनिया में, जा बसा जाये।

गई नहीं है ये उदासी इतनी पीने पर,
ग़म भुलाने के लिए, और कुछ पिया जाये।

●

अच्छी लगती हो

सोते में भोली दिखती हो।
हँसती हो अच्छी लगती हो।

तुम इतनी अच्छी होकर भी,
मुझसे क्यों कटती रहती हो ?

प्रभु ने कोमल तुम्हें बनाया,
फिर कठोर तुम क्यों बनती हो ?

मैंने सब कुछ दिया तुम्हें है,
किस कोने में दिल रखती हो ?

धरा समान धैर्य है तुममें,
फिर उदास क्यों तुम लगती हो ?

सबर करो जितना मिल पाया,
सोच–सोच तुम क्यों जलती हो?

कभी न ज्यादा रूठो मुझसे,
चाहे मेरी ही ग़लती हो।

●

तितलियाँ

सुन्दर होतीं ख़ूब तितलियाँ।
मन बहलातीं ख़ूब तितलियाँ।

बैठ–बैठ फिर उड़ जाती हैं,
हैं दौड़ातीं ख़ूब तितलियाँ।

रंगबिरंगे कपड़े पहने,
ध्यान बँटातीं ख़ूब तितलियाँ।

जितना सुन्दर तन, मन सम्भव,
कर दिखलातीं ख़ूब तितलियाँ।

सुन्दरता को छुओ न, देखो,
यह बतलातीं ख़ूब तितलियाँ।

कर्म और गुण श्रेष्ठ धरा पर,
यही जनातीं ख़ूब तितलियाँ।

इनका रूप–जाल धोख़ा है,
समझा जातीं ख़ूब तितलियाँ।

●

हास्य–व्यंग्य

इतना सीख लो

सफल ज़िन्दगी के लिए, तुम इतना सीख लो।
अवसर के अनुकूल ही, तुम चलना सीख लो।

कमज़ोर को दबाओ, कितना ही ज़ोर से,
शहज़ोर के सामने, तुम झुकना सीख लो।

ऊपर से यह कहो कि, ख़ुदा में ईमान है,
फ़ायदे के लिए मगर. कुफ़्र करना सीख लो।

दिल तुम्हारा मीत से मिल पाये या नहीं,
दूर से ही दौड़कर, तुम लिपटना सीख लो।

जी सको न फूल बनकर, तो कोई बात नहीं,
इत्र लगाकर ही सही, पर महकना सीख लो।

खींचते हैं पैर जो, पास में रहते सदा,
अपनों से इसलिए, बचना–सम्हलना सीख लो।

ज़िन्दगी में चाहते अगर शान्ति से रहना,
गृह–लक्ष्मी के हुक्म पर, नित्य चलना सीख लो।

●

दुनिया जाय रसातल में

मतलब से बस मतलब रखना, दुनिया जाय रसातल में।
काम नहीं बस बातें करना, दुनिया जाय रसातल में।

जिन लोगों ने त्याग किया है, दुख भोगा है जीवन में,
ऐसी त्याग–नीति से बचना, दुनिया जाय रसातल में।

दया–धर्म की बातें करते, ऐश करें वे छिप–छिपकर,
सही राह है यही पकड़ना, दुनिया जाय रसातल में।

पद–पैसे को सभी पूछते, दोस्त न कोई निर्बल का,
सच्चा साथी पैसा अपना, दुनिया जाय रसातल में।

जब खाना तुम ख़ुद खाओगे, तभी जायेगा पेट में,
केवल अपनी भूख समझना, दुनिया जाय रसातल में।

पाप सर्वव्यापी कलियुग में, पुण्य खड़ा चौराहे पर,
इससे पाप संग ही रहना, दुनिया जाय रसातल में।

खेलो–खाओ मौज मनाओ, स्वर्ग–नरक की क्या चिंता,
हमें न मुक्ति–जाप है जपना, दुनिया जाय रसातल में।

●

बन जाओ मक्कार

बन जाओ मक्कार, तानकर सीने को।
बनो धरा पर भार, तानकर सीने को।

सच बोलो तो ख़ूब फ़ज़ीहत होती है,
बोलो झूठ हज़ार, तानकर सीने को।

सतयुग–त्रेता गये, आज युग कलियुग का,
इसकी सुनो पुकार, तानकर सीने को।

मानेंगे एहसान न धोखे में रहिए,
भूलें सब उपकार, तानकर सीने को।

सत्य, धर्म, ईमान अस्मिता खो बैठे,
छोड़ो इनको यार, तानकर सीने को।

चाल–ढाल जो है दुनिया, की अपना लो,
करो नक़द व्यापार, तानकर सीने को।

जय असत्य की, जय अधर्म की, छल–बल की,
बोलो बरख़ुरदार, तानकर सीने को।

●

अच्छा हुआ

जो भी हुआ, अच्छा हुआ।
पानी गिरा, अच्छा हुआ।

रात दिन वह खाँसता था,
बुड्ढा मरा, अच्छा हुआ।

जाना पड़ा वन राम को,
रावण मरा, अच्छा हुआ।

द्रोपदी को दाँव पर रख,
खेला जुआ, अच्छा हुआ।

लूटने की छूट है सबको,
जन्मा यहाँ, अच्छा हुआ।

दीन दुनिया देखने मैं,
पैदा हुआ, अच्छा हुआ।

मैं अकड़ता फिर रहा था,
अब सिर झुका, अच्छा हुआ।

●

ईमान बिकता है

आदमी का आज तो, ईमान बिकता है।
आदमी भी जिस तरह, सामान बिकता है।

जिस तरह की चाहते, सेवा खरीदो तुम,
आज तो श्रम ही नहीं, श्रमदान बिकता है।

स्वाभिमानी हर जगह, दिखते हैं भटकते,
हर गली कूचे में नित, सम्मान बिकता है।

आज पैसा सिर्फ़ पैसा, यदि तुम्हारे पास,
जैसा तुमको चाहिए, फ़रमान बिकता है।

आज पूजा पाठ भी, व्यापार हो गया,
मंदिरों में देखिये, भगवान बिकता है।

दान तो बस दान है, आँकिये क़ीमत नहीं,
पर चुनावी दान में, मतदान बिकता है।

हर तरह के आदमी हैं, आज बिकने को,
गुणहीन की तो छोड़ दो, गुणवान बिकता है।

●

बेशर्म बनो

जन्म लिया तुमने कलियुग में, तो बेशर्म बनो।
दया करोगे लुट जाओगे, तुम बेदर्द बनो।

स्वारथ की ये दुनिया है, स्वारथ के रिश्ते हैं,
आपने स्वारथ पूरे करने, तो ख़ुदग़र्ज़ बनो।

अपने मतलब से मतलब, दुनिया की क्या चिन्ता,
काम न पूरा हो पाये, तो फिर बेधर्म बनो।

नियम नीति से चलने वाले, घाटे में रहते,
काम बने अवसरवादी बन, तो बेशर्त बनो।

काम नहीं करना हो जिसका, उसको झाँसा दो,
उत्तर में ऐसा कुछ बोलो, तुम सिरदर्द बनो।

लड़ोगे ताकतवर से तो वे टाँगें तोड़ेंगे,
जब भारी पड़ जाओ तो फिर, पूरे मर्द बनो।

सीखो ऐसी विद्या जिससे सारे काम बनें,
और दिखावे के ख़ातिर, सबके हमदर्द बनो।

●

दैया–रे–दैया

पैसे बिना न काम, दैया–रे–दैया।
चित्त का चैन हराम, दैया–रे–दैया।

मँहगाई बढ़ती जैसे क्वाँरी बिटिया,
वेतन गिरे धड़ाम, दैया–रे–दैया।

स्वारथ से ही रिश्ते बनते, मिटते हैं,
परमारथ गुमनाम, दैया–रे–दैया।

चोर–चोर मिलकर करते सीनाज़ोरी,
अच्छों पर इल्ज़ाम, दैया–रे–दैया।

सभी कमीशन–रिश्वत लेते–देते हैं,
है यह चर्चा आम, दैया–रे–दैया।

सभी कुओं में भाँग पड़ी पीते पानी,
क्या होगा अंजाम, दैया–रे–दैया।

अगर गाँठ में पैसा है, कुछ भी कर लो,
इसके सभी गुलाम, दैया–रे–दैया।

●

फ़ुल टाइम का देशभक्त

मेरे पीछे चलो सभी, मैं फ़ुल टाइम का देशभक्त।
मेरी झोली भरो सभी, मैं फ़ुल टाइम का देशभक्त।

इस पृथ्वी पर ही मैं तुमको, स्वर्गिक सुख दिखलाऊँगा,
मेरी ख़ातिर मरो सभी, मैं फ़ुल टाइम का देशभक्त।

मेरे सभी विरोधी गुंडे, नहीं तुम्हें जीने देंगे,
मेरी छाया बनो सभी, मैं फ़ुल टाइम का देशभक्त।

मैं ही सिर्फ़ धर्म पर चलता, बाक़ी सभी अधर्मी हैं,
मेरी ख़ातिर लड़ो सभी, मैं फ़ुल टाइम का देशभक्त।

चिन्ता मुझे देश की इतनी, निश–दिन मैं सोचा करता,
मैं जो कहता करो सभी, मैं फ़ुल टाइम का देशभक्त।

अब कुर्सी मिल गई मुझे, मैं काम देश का करता हूँ,
अपनी कहकर टरो सभी, मैं फ़ुल टाइम का देशभक्त।

कुर्सी में कितनी ताक़त है, अगर कहो तो दिखलादूँ,
मुझे देखके डरो सभी, मैं फ़ुल टाइम का देशभक्त।

●

किसकी ज़िम्मेदारी है

लेट हो गई रेल, किसकी ज़िम्मेदारी है ?
बिजली है क्यों फेल, किसकी ज़िम्मेदारी है ?

चोर, डकैत–लठैत सभी ऐंठते मूँछे हैं,
कुर्सी से है मेल, किसकी ज़िम्मेदारी है ?

अपराधी, अपराधी हैं, वे तो भागेंगे ही,
डाली नहीं नकेल, किसकी ज़िम्मेदारी है ?

नैतिकता बेमानी, सब कुछ पैसा है आज,
देखो रेलम–पेल, किसकी ज़िम्मेदारी है ?

करते हैं मज़ा आज माफिया पूँजीपति ही,
भले रहे हैं झेल, किसकी ज़िम्मेदारी है ?

जिसकी लाठी भैंस आज उसी की होती है,
हेड आये या टेल, किसकी ज़िम्मेदारी है ?

गलती उनकी में तीन उँगलियाँ अपनी ओर,
कैसी ठेलम–ठेल, किसकी ज़िम्मेदारी है ?

●

कुर्सी

हमें बिठा दो कुर्सी पर, तो हम कर्तव्य निभा देंगे।
सोने की चिड़िया स्वदेश है, हम इसको चमका देंगे।

जितना पेट भरा हो अपना, सेवा उतनी हो सकती,
सबकी सेवा करते–करते, अपनी तोंद बढ़ा देंगे।

आँख किसी की उठी देश पे, उसकी आँखें फोड़ेंगे,
देश सुरक्षा करने के हित, सबकी जान लुटा देंगे।

दुनिया में बिन धरम–करम, क्या कोई फल मिलता है?
क़ीमत पूरी अदा करोगे, तो सब काम करा देंगे।

जनता की सेवा करने में, लोग डालते हैं बाधा,
साथ तुम्हारा मिले हमें तो, उन सबको हटवा देंगे।

जनता साथ दे रही मेरा, मुझको कोई फ़िकर नहीं,
पैसा मेरी गाँठ–टेंट में, लम्बी भीड़ जुटा देंगे।

सोने में ताँबा मिलने से, सोना होता है मज़बूत,
इसीलिए सोने में हम, ज्यादा ताँबा मिलवा देंगे।

●

ईश्वर की इच्छा

काग हंस पर अकड़ रहे, ईश्वर की इच्छा।
भले आदमी उजड़ रहे, ईश्वर की इच्छा।

आज ज़माना बहुमत का होता है भाई,
दुष्ट दलों में उमड़ रहे, ईश्वर की इच्छा।

खुले बदन की रोज़ नुमायश करते हैं हम,
होली में भी उघड़ रहे, ईश्वर की इच्छा।

है नहीं सलीक़ा, जिन्हें कि कैसे बात करें,
बात–बात पर झगड़ रहे, ईश्वर की इच्छा।

कल तक जिनके पौ बारह थे औ' जलवे थे,
आज एड़ियाँ रगड़ रहे, ईश्वर की इच्छा।

सदा चोरियाँ होती आईं, आगे होंगी भी,
चोर शाह को पकड़ रहे, ईश्वर की इच्छा।

माया जिसकी छाया से हमको बचना था,
बाहुपाश में जकड़ रहे, ईश्वर की इच्छा।

●

भला आदमी क्या कर लेगा

चाहे जितना उसे सताओ, भला आदमी क्या कर लेगा?
चाहे जितना मूर्ख बनाओ, भला आदमी क्या कर लेगा?

बात बताता हूँ मैं पक्की, मज़बूती से गाँठ–बाँध लो,
उससे सारे काम कराओ, भला आदमी क्या कर लेगा ?

कलियुग का यह समय चल रहा, नीति–धर्म की बातें छोड़ो,
वादा करके नहीं निभाओ, भला आदमी क्या कर लेगा ?

कहे काम को बना बहाने, पिछली सारी बातें भूलो,
फिर ऊपर से आँख दिखाओ, भला आदमी क्या कर लेगा?

भला मिले अफ़सर यदि तुमको, तो पौ बारह अपने समझो,
जब चाहो तब दफ़्तर जाओ, भला आदमी क्या कर लेगा ?

ले लो कर्ज़ मिले यदि उससे, लौटाने की बात न सोचो,
खा–पी करके मौज उड़ाओ, भला आदमी क्या कर लेगा ?

दुष्टों से तुम कभी न भिड़ना, वर्ना वे टाँगें तोड़ेंगे,
भलेमानुसों को दहलाओ, भला आदमी क्या कर लेगा?

●

भले आदमी कम मिलते हैं

मक्कारों का लगा ज़माना, भले आदमी कम मिलते हैं।
अच्छे–अच्छे रोते रहते, दुष्ट आदमी नित हँसते हैं।

अवसरवादी, लोभी, कायर, डरते–डरते ही जीते हैं,
गैंग बना लेते हैं जब ये, अत्याचार ख़ूब करते हैं।

चोरी करते बड़े हुए ये, बने हुए हैं अँग समाज के,
कोई इनको जान सके क्या ? चोर साथ ही तो रहते हैं।

बीत गए हैं दिन वीरों के, धूर्तों की अब माँग बढ़ी,
माँग पूर्ति का नया ज़माना, खोटे सिक्के भी चलते हैं।

सत्य–राह पर चलता है जो, उसकी कितनी ऐसी–तैसी,
तरह–तरह के रंग दिखाकर, शोषण उसका सब करते हैं।

केवल स्वारथ की दुनिया है, स्वारथ के ही रिश्ते–नाते,
धोखेबाजों के पौ बारह, सबको ही तो वे छलते हैं।

धर्माधर्म उचित–अनुचित को, जाने बिना ज़िन्दगी जीते,
उनका जीना निष्फल समझो, रोज़–रोज़ ही ये मरते हैं।

●

झूठे—मक्कार

निपटना कठिन होता है, झूठे मक्कारों से।
करते हैं परेशान ये सबको, अपनी चालों से।

ये हमेशा चेहरे पे चेहरे, चढ़ाये रहते हैं,
बहुत बच के रहना मेरे दोस्त! इनके झाँसों से।

ये होते हैं. तेज़ाब, ढलते हैं, हर साँचे में,
और फिर कमज़ोर को काटते हैं, दाँतों से।

इन्होंने सही रास्ता, किसी को दिखाया नहीं,
और ये करते हैं शिकार, अपनी घातों से।

इनकी असलियत को जानना आसान नहीं,
करते हैं ख़ुश सबको, चालभरी बातों से।

चालाकी की किताब, साथ लिए रहते हैं,
न्याय का ख़ून ये करते हैं, अपने हाथों से।

इनसे मुलाक़ात की, हमेशा तौबा करिए,
ख़ुदा बचाये इन चालबाज़ दग़ाबाज़ों से।

●

पत्नी के क़ाबू में रहिए

पत्नी के क़ाबू में रहिए।
जितना कहती, उतना करिए।

साली से जब चाहे मिलिए,
पत्नी यदि ख़ुश हो, मत डरिए।

पैसे की हो बेहद क़िल्लत,
चुपके से, पत्नी से कहिए।

पत्नी सँग तो मिलती इज़्ज़त,
उसको साथ, हमेशा रखिये।

क़िस्मत से है सब कुछ मिलता,
देख किसी को, कभी न जलिए।

अधिक प्यार पत्नी ही देगी,
औरों से, हरदम ही बचिए।

पत्नी का दिल नहीं दुखाना,
बात उसी की सुनिए, गुनिए।

●

उसकी फ़िकर करो

जिससे तुमको लगता डर, उसकी फ़िकर करो।
काम फँसा हो जिसके कर, उसकी फ़िकर करो।

शरम छोड़ देता है जो, उससे सब हारे,
चाहे नारी हो या नर, उसकी फ़िकर करो।

समय चल रहा बुरा आजकल, बचकर रहना,
जो ताके–झाँके घर–घर, उसकी फ़िकर करो।

अपना हित है स्वयं देखना, बहुत ज़रूरी,
सबका हिस्सा जाता चर, उसकी फ़िकर करो।

कहने को तो जाने कितने आते घर में,
जो लाये झोले भर–भर, उसकी फ़िकर करो।

बिना रीढ़ का भला आदमी, अच्छा होता,
पीछे चलता जो मर–मर, उसकी फ़िकर करो।

जाड़े की गुनगुनी धूप सी, भली ख़ुशामद,
जो करता हो सर–सर–सर, उसकी फ़िकर करो।

•

डरते नहीं हम

धर्म पर चलते नहीं हम।
कर्म कुछ करते नहीं हम।

हम प्रशासन से जुड़े हैं,
किसी से डरते नहीं हम।

ज़िम्मेदारी क्यों निभाएँ ?
किसी की सुनते नहीं हम।

यदि ढूँढ़ पाये ढूँढ़ ले,
नित सुलभ रहते नहीं हम।

अगर मजबूरी न हो तो,
कभी भी झुकते नहीं हम।

वेतन तो मिलना ही है,
काम कर थकते नहीं हम।

बदन में ताक़त नहीं है,
इसलिए लड़ते नहीं हम।

●

मज़ा आ गया

उसको फँासा और चाय पी, मज़ा आ गया।
गोली मैंने उसको दे दी, मज़ा आ गया।

सब लेते–देते हैं, कोई जुर्म नहीं है,
किए काम की रिश्वत ले ली, मज़ा आ गया।

दोनों को लड़वाया, इनसे–उनसे कहकर,
हँसता हूँ मैं ही, ही, ही, ही, मज़ा आ गया।

बने–बने में साथ रहा, बिगड़े में खिसका,
बात बताई ऐसी–वैसी, मज़ा आ गया।

जो कुछ है पैसा है, नाते–रिश्ते झूठे,
मैंने तो सीखा इतना ही, मज़ा आ गया।

उनको दूँ धिक्कार, नीति की बात करें जो,
मैंने उनकी की छी, छी, छी, मज़ा आ गया।

खा–पी करके मस्त रहा, की कभी न चिन्ता,
सबकी कर दी ऐसी–तैसी, मज़ा आ गया।

●

अच्छी पैकिंग चाहिए

अन्दर कुछ हो भरा हुआ, अच्छी पैकिंग चाहिए।
पान मसाला सड़ा–गला, अच्छी पैकिंग चाहिए।

मेकप करता जब चेहरा, दिखने में अच्छा लगता,
अन्दर से कितना भद्दा, अच्छी पैकिंग चाहिए।

मीठी–मीठी बातों से, पा जाते हैं वे सब कुछ,
आज ज़माना है अंधा, अच्छी पैकिंग चाहिए।

बाहर से कितनी दहाड़, बातें करते बड़ी–बड़ी,
अंदर से मन मरा–मरा, अच्छी पैकिंग चाहिए।

कपड़े पहने है उजले, सूट–बूट टाई बाँधे,
ख़ाली जेब न एक टका, अच्छी पैकिंग चाहिए।

ऊँची–ऊँची दूकानें हैं, मिलता बस फीका पकवान,
भीड़–भाड़ कितनी ज़्यादा, अच्छी पैकिंग चाहिए।

है दहेज की माँग बड़ी, घर में भूँजी भाँग नहीं,
बाहर से घर लिपा–पुता, अच्छी पैकिंग चाहिए।

●

असली नकली का चक्कर

असली का चक्कर बहुत बुरा, क्यों इसके चक्कर में रहना?
असली से नकली अच्छा है, क्यों असली के पीछे पड़ना ?

नकली चीज़ें सस्ती होतीं, मिलती हैं ये ज़्यादा–ज़्यादा,
नकली चीज़ें ले लो फ़ौरन, क्यों असली चीजों पर अड़ना?

असली घी होता हज़म नहीं, असली सोने से क्या बनता?
असली ज़ेवर महँगे होते, नकली से अच्छा है सजना।

असली फूलों का जीवन कम, वे जल्दी मुरझा जाते हैं,
नकली तो दिखने में अच्छे, नकली फूलों का क्या कहना!

असली चीज़ें महँगी होतीं, धोखा होता, घाटा होता,
नकली ले लो बेफ़िक रहो, फिर ध्यान न इसका तुम रखना।

असली लायें निकले ख़राब, तो सदमा इससे होता है,
नकली तो पहले से नकली, उससे दिल कभी नहीं दुखना।

हालाँकि परेशानी होती, लेकिन असली–असली होता,
नकली पग–पग पर है मिलता, असली का दुर्लभ है मिलना।

●

मैं क्यों काम करूँ

नौकरी सरकारी है, मैं क्यों काम करूँ ?
कभी इधर कभी उधर, रोज सुबह–शाम करूँ।

अपना हित मुझको मालूम, बतलाओ मत,
अफ़सर को हरदम, मैं झुक–झुक सलाम करूँ।

वेतन तो मिलता है दफ़्तर में आने का,
हड्डी तोड़ काम कर, नींद क्यों हराम करूँ ?

मेहनतकश लोगों को अक्सर फँसते देखा,
काम करूँ, भूल करूँ, क्यों न राम–राम करूँ ?

कलियुग में संघ–शक्ति, इसका है, ज्ञान मुझे,
गुटबंदी करके मैं, सबका काम तमाम करूँ।

आज़ादी का मतलब मैंने यह समझा है,
लड़–लड़ कर थका बहुत, अब तो आराम करूँ।

जितना वेतन मिलता, उससे न घर चलता,
सस्ते में ताक़त को, मैं क्यों नीलाम करूँ ?

●

अँधेरे–अँधेरे

होते बहुत से काम, अँधेरे–अँधेरे।
करते दुआ–सलाम, अँधेरे–अँधेरे।

होती नहीं जिनसे, मुलाक़ात दिन में,
जपते उनका नाम, अँधेरे–अँधेरे।

जब लोग पूछते हैं, करते गुनाह क्यों?
कहते कि मिलते दाम, अँधेरे–अँधेरे।

मिलती है ख़ुशी जब, लगती कहीं आग,
मच जाता है कुहराम, अँधेरे–अँधेरे।

थकते नहीं हैं जो, तारीफ़ करते–करते,
लगा देते इल्ज़ाम, अँधेरे–अँधेरे।

होता महज़ दिखावा, यों लड़ना–झगड़ना,
टकराते उनके जाम, अँधेरे–अँधेरे।

आती है लाज दिन में, मुझसे अगर मिलें,
तो आओ घनश्याम, अँधेरे–अँधेरे।

●

मुसीबत सबकी है

फैला भ्रष्टाचार, मुसीबत सबकी है।
महँगाई की मार, मुसीबत सबकी है।

पढ़े–लिखे सब घूम रहे हैं सड़कों पर,
मिले न कारोबार, मुसीबत सबकी है।

पैसा पास न एक, लदे हैं कर्ज़े से,
परेशान परिवार, मुसीबत सबकी है।

जिसकी लाठी, भैंस उसी की होती है,
बेदम चीख़–पुकार, मुसीबत सबकी है।

मज़े कर रहे आज, माफिया पूँजीपति,
सब हैं पक्के यार, मुसीबत सबकी है।

इस पल आते नोट, दूसरे पल उड़ते,
बाक़ी काम हज़ार, मुसीबत सबकी है।

काम, क्रोध, मद, लोभ आज के ज़ेवर हैं,
कैसे पनपे प्यार? मुसीबत सबकी है।

●

मैं बिकाऊ माल हूँ

पीठ पर मेरी लिखाओ, मैं बिकाऊ माल हूँ।
हाट में मुझको बिठाओ, मैं बिकाऊ माल हूँ।

ईमान को कर में लिए, फिर रहा हूँ दरबदर,
कुछ बड़ी क़ीमत लगाओ, मैं बिकाऊ माल हूँ।

बुद्धि गिरवी रख ख़ुशी से, भर रहे वे झोलियाँ,
बुद्धि का सौदा कराओ, मैं बिकाऊ माल हूँ।

तन को है ख़ाक में मिल जाना, निश्चित एक दिन,
तन से तुम कुछ भी कराओ, मैं बिकाऊ माल हूँ।

दिल के दल–दल में फँसा जो, वह निकल पाया नहीं,
दिल के ग्राहक को बुलाओ, मैं बिकाऊ माल हूँ।

रूह अपनी बेचकर, मैं मोल लूँगा आसमाँ,
रूह की बोली लगाओ, मैं बिकाऊ माल हूँ।

बेचकर अपना सभी कुछ, हाथ ख़ाली ही रहे,
कुछ नया धंधा बताओ, मैं बिकाऊ माल हूँ।

●